दूसरा अध्याय

एक और द्रोणाचार्य की तात्विक समीक्षा

पृष्ठ : 21-60

एक और द्रोणाचार्य की तात्विक समीक्षा

१. भूमिका :

संस्कृत उक्ति है, "काव्येषु नाटक रम्यः " १ अर्थात काव्य-साहित्य की सभी विधाओं में नाटक विधा सबसे अधिक रमणिय और आकर्षक है । आचार्य भरतमुनि के अनुसार -

'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्प न सा विद्या न सा कला ।
न ऽ सौ योगो न तत्कर्ष नाट्ये ऽ स्मिन्यन्न दृश्यते ।' २

अर्थात ऐसा कोई भी ज्ञान, कोई भी शिल्प, कोई विद्या, कोई कला, कोई योग, कोई कर्म, नहीं है जो नाटक में दिखाई न देता हो ।

इस संदर्भ में डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल अपने ग्रंथ 'रंगमंच और नाटक' भूमिका में लिखते है, - " क्या हमने कभी गंभीरतासे सोचा है कि, हमारा युग क्या है ? इसका व्यक्तित्व कैसा है, और क्या इस युग की प्रगति और इसकी अंतरात्मा इसका 'सारा सुख - दु:ख, स्वप्न और आशा, पीड़ा और त्रास आज हमारे नाट्य कृतियों और उनके अनुष्ठानों में प्रतिबिम्बित है ? "३

उपर्युक्त कथनों का तथ्य डॉ. शंकर शेष के नाटक में दिखाई देता है। उनका नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' अपनी विषय महत्ता और शिल्पगत चमत्कृतियों के कारण बहुचर्चित रहा। इस कृति का समीक्षात्मक तात्विक अध्ययन इय अध्याय में प्रस्तुत है :

नाटक की शिल्पविधि के सम्बन्ध में डॉ. शान्ति मलिक कहते है - "रचना के दृष्टि से नाटक के मूलभूत तत्व है - कथानक, पात्र-चित्रण, संवाद और भाषाशैली, देश-काल और वातावरण, उद्देश और रंगशिल्प । "४

'नाटक एक दृश्यकाव्य है ।' ५ इसी कारण रंगशिल्प उसका अनिवार्य तत्व है । भारतीय तत्वों की दृष्टिसे - कथावस्तु, नेता, रस, अभिनय और वृत्तियाँ ये तत्व है । जिनमें से कथावस्तु, नेता, रस ये भेदक तत्व माने जाते है ।

डॉ. गोविंद त्रिगुणायतजी भारतीय और पाश्चात्य नाट्यतत्वों के संबंध में लिखते है, " ..... जब हम वस्तु नेता और रस इन तीन भेदक तत्वों को अभिनय और वृत्ति तत्वोंसे मिला देते है, तो भारतीय नाट्य में पाँच तत्व हो जाते है । "६ इस की दृष्टि से आधुनिक तत्वों का विवेचन करना कठिन होता है क्योंकि नाटक में भारतीय आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित रस के अंशों का प्रभाव आधुनिक नाटककारों द्वारा ग्रहण नहीं किया है ।

आधुनिक नाटक पाश्चात्य शैली से प्रभावित होने के कारण प्रायः आधुनिक नाटक का मूल्यांकन आधुनिक पाश्चात्य तत्वों से किया जाता हैं ।

डॉ. शंकर शेष स्वातंत्र्योत्तर काल के नाटककार हैं । वे पाश्चात्य नाट्य जगत में किये जानेवाले प्रयोगों से परिचित और प्रभावित हैं । इसी से उनके नाटकों का मूल्यांकन इन्हीं स्वीकृत तत्वों के आधार पर किया जाना औचित्यपूर्ण होगा ।

आज के वर्तमान नाट्यआचार्यो ने पाश्चात्य नाट्य के निम्नलिखित छः तत्व बतलाये हैं - १. कथावस्तु २. चरित्र-चित्रण ३. संवाद ४. कथोपकथन ५. गीत ६. अभिनेयता तथा ७. भाषा और शैली ।

'कुछ लोग देश-काल' शीर्षक एक तत्व और स्वीकार करते हां । ७ उपर्युक्त विवेचन की दृष्टि में रखते हुए नाट्यशिल्प के अंतर्गत प्रमुखतः निम्नलिखित तत्वों का समावेश होता है - १. कथावस्तु २. पात्र-चित्रण ३. कथोपकथन ४.देश-काल और वातावरण ५. भाषाशैली ६. उद्देश । यदि कोई नाटककार अपने नाटक में गीतों का प्रयोग करता है, तो 'गीत' तत्व मानकर उनका विवेचन किया जा सकता है ।

स्व. डॉ. शंकर शेष का नाटक ' एक और द्रोणाचार्य ' गीत विहीन नाटक श्रेणी में आता हैं, अतः उसकी समीक्षा उपर्युक्त छः तत्वों के आधार पर ही की जा सकती है।

प्रस्तुत कृति का प्रथम संस्करण कब निकाला यह बताना कठिन हैं । अतः इसके प्रयोगों के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका लेखनकाल 'फंदी ' के बाद रहा हो, तथा वह सन् १९७१-७२ की अवधि में रहा हो । इसका चतुर्थ संस्करण, पराग प्रकाशन देहली से सन् १९८३ में प्रकाशित हुआ है । शिल्पविधि की दृष्टि से 'एक और द्रोणाचार्य ' नाटक की समीक्षा करेंगे -

२. कथावस्तु :

'एक और द्रोणाचार्य ' नाटक को डॉ. शंष ने दो भागों में विभक्त किया है - पूर्वार्ध्द तथा उत्तरार्ध्द और कुल पृष्ठसंख्या ली रही है । वर्तमान युग के प्रतिनिधि पूर्वार्ध्द में और उत्तरार्ध्द में वर्तमान युग की कथा तथा महाभारतीय कथा ऐसी दो कथाएं समानांतर चलती है । अतः प्रत्येक भाग के पुनः दो-दो हिस्से बने हुए से दिखते हैं, परंतु कथाबीज एक जैसा पिरोया गया है । ' एक और द्रोणाचार्य ' नाटक की कथावस्तु निम्नलिखित है ।

१. पूर्वार्ध्द : (पृ. २७१ से २९४)

प्रो. अरविंद उद्विग्न मनस्थिति में हैं । उसकी पत्नी लीला उसे घरेलू बातों से बेखबर रहने के लिए ताने दे रही है । इसी समय अरविंद का सहकारी यदू खबर देता है, कि अरविंद द्वारा प्रेसिडेंट के लडके को पकडा गया, नकल का मामला दबा देने का प्रयत्न चल रहा है । कॉलेज के छात्रों ने मामला दबा देने के प्रयास के खिलाफ आवाज उठाई है । अपनी रिपोर्ट वापस लेने के लिए प्रिन्सिपल भी अरविंद पर दबाव डालने के प्रयास मे है । यदू और लीला भी उसे यही सलाह दे रहे है किंतु आदर्शवादी अरविंद शिक्षा क्षेत्र की बुरी स्थिति पर बखौलता है । यदू आगे की जानकारी लेने, तो अरविंद सिगरेट लेने निकल पडते है ।

यदू और अरविंद के निकल जाने पर प्रिन्सिपल आते है । प्रिन्सिपल लीला को समझाते है कि वह अरविंद को रिपोर्ट वापस लेने के लिए तैयार करें । रिपोर्ट वापस नही लिया तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा ऐसा बताते है । इस घटना से हो सकता है कि प्रेसिडेंट कॉलेज ही बंद कर दे और सभी को बेकार बनाना पड़े । अतः सभी को अपनी रोटी की फिक्र लगी हुई है । चुंगी नाके के क्लर्क के पदसे प्रिन्सिपल के पद तक अपने चढ़. आने की बात भी प्रिन्सिपल बताते है । तीस साल उन्होंने यही किया । अतः अरविंद को समझाते है और सलाह देकर चले जाते हैं ।

लीला अरविंद को प्रिन्सिपल से हुई बातें बताकर रिपोर्ट वापस लेने के लिए हठ करती है । इसी समय अरविंद का प्रिय विद्यार्थी चंदू आता है । वह बताता है कि, प्रो. मिश्रा ने नकल के झूठे आरोप में उसे फँसाया है । उसके सामने ही प्रेसिडेण्ट का लड़का नकल कर रहा था । हवा के झोकों से उसका नकल का पर्चा चंदू के पास आया । चंदुने जब उसे प्रोफेसर को देने उठाया, तो मिश्राने उसे पकडा और रिपोर्ट कर दी । अब उसकी रिपोर्ट युनिवर्सिटी भेजी जा रही है । राजकुमार की रिपोर्ट दबाई जा रही है । चंदू के पिता प्रेसिडेण्ट के राजनीतिक विरोधक है, अतः उसे विरोध की बलि बनाया जा रहा है । विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रुप में चंदू चाहता है कि, राजकुमार की रिपोर्ट भी युनिवर्सिटी भिजवायी जाये ।

चंदू के जाने पर प्रेसिडेण्ट आते है । वह नकल के मामलो मे सभी को दोषी मानते है । अपनी राजनैतिक प्रतिमा कलंकित न हो इसलिए वह अपने बेटे की रिपोर्ट दबाना चाहते है, तथा ऐसा न होने पर कॉलेज बंद कर देने का डर दिखाता है । परंतु अरविंद अपने निर्णय पर अडिग रहता है । नौकरी चली जाने का भय उसके संदर्भ में नाकाम होता है । अब प्रेसिडेण्ट अरविंद को प्रिन्सिपल बनाने की बात कहकर तथा निर्णय के लिए समय देकर चले जाते है ।

अब लीला अरविंद को प्रिन्सिपल बन जाने की सलाह देती है। यदू भी खबर देता

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

है कि शहर में तनाव बढ़ रहा है। चंदू तथा उसके साथी अरविंद का नाम लेकर झिंदाबाद के नारे लगा रहे है, तो राजकुमार और उसके साथी अरविंद को मार डालने की योजना बना रहे है। यदू बतलाता है कि, न्याय का पक्ष लेने से ही उनके पुराणे साथी विमलेन्दु की हत्या हो चुकी थी। अत: यदू सुझाता है कि अरविंद प्रिन्सिपल बन कर उसके लिए व्हाईस प्रिन्सिपल का रास्ता बनायें। लीला का भी यही हट है।

द्विधा मन:स्थिति में बैठे अरविंद के सामने उसके पुराने साथी तथा मृत मित्र नाटककार विमलेन्दु की छायाकृति उभरती है। अरविंद उसके बलिदान से प्रभावित है, पर विमलेन्दु उसे बलिदान न मानकर मूर्खता बतलाता है। कहता है, - 'उसकी सहायता के बाद प्रत्येक ने उसे क्रान्तिकारी, हुतात्मा बतलाया था, पर किसी ने कोई भी सहायता नही की थी। अब साल भर हुआ, उसकी बीबी नौकरी के लिए दर-दर की ठोंकरें खा रही है। अत: मुझ जैसी मूर्खता तुम भी मत करो। द्रोणाचार्य को याद करो .... ।'[८]

धीरे-धीरे आनेवाले प्रकाश में महाभारतीय कथा प्रारंभ होती है - द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा दूध पिलाने का हट लिए माता के सामने रो रहा है। घर में दूध है ही नहीं। माता कृपी उसे समझाती है, पर वह मानता नहीं है। जब द्रोणाचार्य आते हैं, तब कृपी अश्वत्थामा को दूध के नाम पर आटे का घोल पिला रही है। दूध पीने का हठ पूरा होने से संतुष्ट अश्वत्थामा बाहर खेलने जाता है। द्रोणाचार्य के पूछनेपर कृपी उसे आटे का दूध पिलाने की बात बताती है तब द्रोणाचार्य अत्यंत निराश होकर द्रुपद के पास जाते है। पर द्रुपद से वे अपमानित हो जाते है। तब कृपी योजना बध्द तरीके से अपने अपमान का बदला लेने के लिए द्रोणाचार्य को प्रोत्साहित करती है।

इसी समय कौरव पांडवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य को राजकुमारों के गुरु नियुक्त करने के विचार से उन्हे निमंत्रण करने आते है। भीष्म ने सुना था कि, द्रोणाचार्यने राजकुमारों की गेंद अपनी शस्त्र-विद्या से कुएँ से निकाली थी। अत: वे ही आचार्य पद के योग्य है परन्तु द्रोणाचार्य आपना स्वतंत्र आश्रम प्रस्थापित करने की बात सोच रहे थे। लेकिन भीष्म के रुप में एक मौका सामने देख दारिद्रय से उबी कृपी यह निमंत्रण स्वीकार कर लेती है। द्रोणाचार्य कुछ कहना चाहने पर भी कह नही पाते । कृपी गुरुवंश के आश्रमसे द्रुपद से बदला लेने का मौका मिलने की बात कहकर द्रोण को मानसिक रुप में तैयार करती है।

कौरव - पांडव विद्या ग्रहण कर रहे हैं। जंगल में आखेट के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे है। पर कहीं से इस कुशलता से बाण आते हैं कि हिरनों के पीछे लगे कुत्तों का भौंकना ही बन्द हो जाता है। खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते है। एकलव्य द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानता है, यद्यपि उन्होंने उसे शिष्य के रुप में स्वीकार करने से नकारा था । बाद में एकलव्य ने द्रोण का पुतला बनाकर अपनी साधनासे आश्चर्यकारक कौशल प्राप्त किया था। एकलव्य इसे गुरुकृपा ही मानकर गुरु - दक्षिणा के रुप में मुहं मांगा धन, राज तथा अपने प्राण भी देनेके लिए तैयार है। तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दहिने हाथ का अंगूठा मांगते है। अर्जुन भी इस अजीब गुरु-दक्षिणा की मांग से चकित है। द्रोणाचार्य बताते है कि अर्जुन को एकमात्र श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया है। तभी एक थाल में कटे हुए अंगूठे को लिए एकलव्य आता हैं और गुरु दक्षिणा समर्पित करता है।

२) उत्तरार्द्ध : (पृ. २९४ से ३२0 तक)

पूर्वार्ध्द की घटनाओं के बाद तीन साल बीत चुके है। अरविंद प्रिन्सिपल बना है, पर हमेशा चिंतित रहता है। लीला अब खुश है। उसका बेटा फस्ट आया है, किन्तु अरविंद खुशी मनाने की मनस्थिति में नहीं है। प्रेसिडेण्ट के लड़के राजकुमार ने कॉलेज गार्डन मे अनुराधा नामक कॉलेज की विद्यार्थिनी पर बलात्कार करने की कोशिश की थी, जिसका एकमात्र गवाह अरविंद ही है। अनुराधाने प्राचार्य अरविंद के पास शिकायत की थी। अरविंद राजकुमार को कॉलेज से निकाल देने की बात

पर विचार कर रहा है। यदु और लीला इस झमेले में न पहुंचनेकी सलाह दे रहे है। ऐश की जिंदगीने तथा सुविधाओं ने मानों उसकी संवेदनाओं को मार डाला है और इसी पर अरविंद अधिक बौखलाता है। प्रेसिडेण्ट के आगमन पर यदु निकल जाता हैं।

इसके बाद अनुराधा आती है। उस के माँ-बाप भी प्रेसिडेण्ट के भय से बात उठाना नहीं चाहते हैं। राजकुमारने उसे अपहृत करने का और पिताजी को जान से मारने का भय दिखाया है, मगर वह अरविद के भरौसे न्याय पाना चहती है, फिर भी अशंकित है। क्योंकि तीन साल पहले भी अरविंदने प्रिन्सिपली पाकर चंदू को धोखा दिया था, अपनी रिपोर्ट वापस ली थी । चंदू रस्टिकेट हुआ था, विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज हुआ था। इन सब बातों पर अरविंद उसका साथ देने का निश्चय प्रकट करता है, तभी प्रसिडेण्ट का फोन आता है। विरोध में खडे होने पर १५ हजार के गबन में गिरफ्तारी की बात सुनकर अरविंद घबरा जाता है और अनुराधा को ही शिकायत वापस लेने की सलाह देने लगता है। अरविंद में आये इस परिवर्तन को देखकर निराश अनुराधा निकल जाती है। अरविंद लीला को प्रेसिडेण्ट की बातें बताही रहा है तभी ट्रक ऑक्सिडेण्ट में अनुराधा के मर जाने की खबर पहुँचती है। अरविंद आहत होता है।

इस्तीफा लिखनेवाले अरविंद के समाने विमलेन्दु की छायाकृति प्रकट होती है तथा इस्तीफा फाड देने की सलाह देती है। विमलेन्दु इस मामले में अकेले अरविंद को ज़िम्मेदार नहीं मानता है। लडकी का बाप पाँच हजार रुपये लेकर चुप बैठा है। फिर अरविंद ही तैश में आकर इस्तीफा क्यों दे ? विमलेन्दु बताता है कि उसकी पत्नी को छोटी-सी नौकरी मिल गयी है, पर उसका साठ साल का बुढा अफसर प्रमोशन के बहाने उसपर डोरे डाल रहा है। दुनिया में यही चल रहा है अत: तुम प्रेसिडेण्ट का साथ दो। हो सकता है, प्रेसिडेण्ट मंत्री बनेगा और शिक्षा मंत्री भी बनेगा तो साथ देने पर वह तुम्हारे लिए भी कुछ कर देगा । अरविंद अनुराधा के मौत के बारे में तिलमिलाहट व्यक्त करता है, तब विमलेन्दु नारी के अपमान की बात को बहुत पुराणी परंपरा बताता है। अत: द्रौपदी के उदाहरण को याद करने के लिए कह देता है। और अंधकार में विलीन हो जाता है।

धीरे-धीरे प्रकाश में महाभारतीय कथा प्रारंभ होता है। अश्वत्थामा भरे दरबार में द्रौपदी का अपमान होने पर भी सभी के चुप रहने से उदास है। वह माँसे पूछता है कि "मेरे पिताजी चुप क्यों रहे ? मेरा खून भी नहीं खौला ? मेरे संस्कारों में क्या गडबडी थी ?" ९ कृपी पिता से पूछने के लिए कहती है। उनसे पूछने पर वे माता की ओर संकेत कर देते हैं। फिर बताते हैं कि - "उस दिन भूख मेरे सिध्दान्त से बडी हो गयी। प्रतिशोध ने विवेक को जीता। उस दिन तुमने मुझे भडकाया और सुख-सुविधा तथा राजकीय सम्मान ने मोहित किया था। राजकीय अन्न की दासता ने विवेक को उसी समय खरीदा था। अब इसमे परिवर्तन असंभव है और इसका परिणाम युद्ध तथा सर्वनाश के सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता। "१0

दृश्य परिवर्तन के सूचक अध:कार प्रकाश के बाद जेल की कोठरी में टूटा अरविद खड़ा है। धीरे-धीरे विमलेन्दु की शरीराकृति उभरती है और कथा पर प्रकाश पडता जाता है। अरविंद प्रेसिडेण्ट की हत्या में कैद है। प्रेसिडेण्ट एक बडे क्लिफ से गिरकर मर चुका है, परंतु उसे धक्का देकर मार डालने के आरोप में अरविंद पकड लिया जाता है। उस घटना का एक मात्र दर्शक चंदू है। वह अनुराधा की मौत से पागल-सा बना आत्महत्या करने उस क्लिफ की ओर गया था। अरविंद को चंदू की गवाही पर विश्वास है की, वह उसे बचा लेगा और बताएगा कि, वह हत्या नही, आक्सिडेण्ट था।

परंतु कोर्ट की कार्यवाही में चंदू अनुराधा का पत्र पेश करता है, जिसमें उस पर बीती सभी बाते लिख दी थी । उनके आधार पर अरविंद के चारों ओर आरोप के शिकंजे और भी दृढ हो जाते हैं। "क्या अरविंद ने प्रेसिडेण्ट को धकेला था ?" ११ इस प्रश्न पर चंदू - 'हो सकता है'। १२ इतनाही उत्तर दे चुका था। अब अरविद विमलेन्दु से पूछता है कि, "चंदू सच क्यों नहीं बोला ? " १३ तब विमलेन्दु अपने द्रोणाचार्य नाटक को याद करने के लिए कहता है।

कौरव - पांडवों के युध्द के पंद्रवे दिन जब द्रोणाचार्य के सेनापतित्व

में कहर ढाया जा रहा था, तब अश्वत्थामा मारे जाने की खबर फैलती है। द्रोणाचार्य सच्चाई जानने कि लिए बेकाबू बनें हैं, पर कोई सत्य नही बता सकता है। अन्त में द्रोणाचार्य युधिष्ठिर से गुरुदक्षिणा के रुप में सच्चाई पुछते है। युधिष्ठिर तब - 'वह नर था , या कुंजर था।" [१४] जैसा - अनिश्चित उत्तर देता है। द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने की सच्चाई समझने के लिए ध्यानस्थ होते है। इसी समय पांडवों के सेनापति धृष्टदयुम्न द्वारा द्रोणाचार्य का वध किया जाता है।

फिर एक बार जेल की कोठरी की पार्श्वभूमि पर। अरविंद और विमलेन्दु सामने आते हैं। विमलेन्दु इन सभी शोकांतिकाओं के मूल में झूट बालने के लिए मजबूर करनेवाली व्यवस्था को दोषी ठहराता है। वह बताता है कि, उस की पत्नी उस बूढ़े अफसर से अपने आप को बचा नें के लिए शहर छोडकर चली गई है। अन्त में वह अरविंद को "एक और द्रोणाचार्य' - व्यवस्था और सत्ता के कोडो से पिटा हुआ द्रोणाचार्य, इतिहास की धार में लकडी से ठूँट की तरह बहता हुआ, वर्तमान की कगारसे लगा हुआ - सड़ा गला द्रोणाचार्य । "[१५] कहता हुआ ओझल हो जाता है ।

३) कथावस्तु की समीक्षा :

सूक्ष्मता से देखा जाए तो प्रस्तुत कृति की कथावस्तु द्विस्तरीय न होकर त्रिस्तरीय है। अरविंद की कथा मूल स्तर, फिर उसका मानसिक द्वंद्व का अरविंद विमलेन्दु की कथा का मनोविश्लेषणात्मक स्तर ओर उन्हे पुष्टि देनेवाला पूर्वार्ध्द में इनका विकास सहज और सरल है। जैसे पृ. २७१ से २८२ तक अरविंद की कथा, २८३ से २८५ तक विमलेन्दु की कथा और २८६ से २९५ तक द्रोणाचार्य की कथा पिरोयी गयी। परन्तु उत्तरार्ध में यह संगटन जटिल हुआ है। जैसे - अरविंद की कथा पृ. २९४ से ३०३ तक, विमलेन्दु की कथा ३०४ से ३०५ तक, द्रोणाचार्य की कथा ३०६ से ३०९ तक फिर विमलेन्दु की कथा ३१० से ३११ तक अरविंद का कथा ३१२ से ३१६ तक, विम्लेन्दु कथा ३१६ पर, द्रोणाचार्य कथा ३१७ से ३१८ तक और अन्त में विमलेन्दु कथा ३१९ से ३२६ तक।

इस प्रकार कथावस्तु को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में डॉ. शेष ने प्रत्यक्ष जीवन के क्रिया-कलापो की गतिमानता में अरविंद - विमलेन्दु के द्वारा अरविंद का मनोविश्लेषण प्रस्तुत कर मूल विषय के सत्य पर प्रकाश डाला है। अत: कथावस्तु तथा उसकी चुनी महत्वपूर्ण घटनाएँ कथावस्तुओं मे निरन्तर विकास लाने में सफल हुए है। यही कारण है कि, मंचपर यह कृति अत्यंत सफल और प्रभावी बन जाती है।

कथानक के विकास में तथा संगठन में त्रिस्तरीय प्रयोग को सफलता से उतरना डॉ. शेष की प्रतिभा का परिचायक है। डॉ. गिरीश रस्तोगी भी लिखती है - "सम्पूर्ण नाटक में दो बाते अखरती है - एक द्रोणाचार्य के मिथक का जितना व्यापक, सशक्त प्रयोग किया जा सकता था, उतना नहीं हुआ है। द्रोणाचार्य के निजी व्यक्तिमत्व की परतें भी पूरी तरह और प्रसिध्द पौराणिक प्रसंग तथा समकालीन स्थिति से अविभाज्य सम्बन्ध के रुप में व्यक्त नहीं हो पायी है। दूसरे नाटककार का मुख्य ध्यान नाटक को रोचक, प्रभावशाली बनानेपर हैं, या यह भी कह जा सकता हैं कि, डॉ. शंकर शेष की मूल प्रवृत्ति नाटक को क्लाईमैक्स तक ले जाने, टकराहट से उत्पन्न प्रवाह की सृष्टि करने और दर्शकों को रोमांचित करने की है। इस नाटक में विमलेन्दु की युक्ति का उपयोग, आदालत का दृश्य, संवादो का रचना, उनकी लय, नाटकीयता के उदाहरण है। निश्चय ही सामान्य दर्शक समुह इस नाटक से बहुत प्रभावी होता है। " [१६]

४. कथावस्तु की विशेषता :

डॉ. शंकर शेष के बहुचर्चित नाटकों मे पहला स्थान 'एक और द्रोणाचार्य' का

है। महाभारत के संदर्भों को आधुनिक जीवन से जोड़ने का अनूठा प्रयास इस नाटक के माध्यम से हुआ है। अतीत को वर्तमान के साथ जोडने की ललक से यह नाटक निर्माण हुआ है। पौराणिक मिथक के माध्यम से आज की शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। आधुनिक युग के द्रोणाचार्य या व्यंग्य दिखाने के लिए उसके अनुरुप महाभारत की कथाका चयन उनकी एक विशेषता है। इस कथा के माध्यम से दर्शकों तथा पाठकों को विचार करने के लिए शेष बाध्य करते है।

इस नाटक की कथा को डॉ. शंकर शेष ने दो भागों में विभक्त किया है - पूर्वार्ध्द तथा उत्तरार्ध्द। कुल मिलाकर पृ. संख्या ७० रही है। वर्तमान युग के प्रतिनिधि प्रा. अरविंद की कथा को महाभारतीय आचार्य द्रोण की कथा से अंधकार - प्रकाश के माध्यम से अंतराल निर्माण कर जोडा गया है। इससे पूर्वार्ध्द में और उत्तरार्ध्द में वर्तमान युग की कथा तथा महाभारतीय कथा ऐसी दो कथाएं समानान्तर चलती हैं। अत: प्रत्येक भाग के पुन: दो - दो हिस्से बनें हुए है, परंतु कथाबीज सर्वत्र एकसा पिरोया गया है।

५) कथावस्तु में समानांतरता :

" एक और द्रोणाचार्य " नाटक में एक साथ दो अधिकारिक कथाएं चलती है, एक में द्रोणाचार्य की कथा है, उसके समानांतर चलनेवाली उससे साम्य रखनेवाली अरविंद की कथा है। इसलिए उसमे बिंब-प्रतिबिंब की समानता कुछ हद तक साकार हो उठी है। नाटक की दोनों कथाएं परस्पर पूरक है। लेखक ने दोनों कथाओं को समानांतर विकसित किया है। एक मे पौराणिक कथा है, तो दूसरे में आधुनिक कथा है।

सुविधा और सुरक्षा के प्रति आकर्षण कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है। अरविंद भी अपनी विचार संहिता को भुलाने के लिए मजबूर हो जाता है क्योंकि पत्नी और पुत्र दोनों उसपर आश्रित है। द्रोणाचार्य अपने राजमार्ग को एकलव्य का अंगूठा लेकर और अरविंद चंदू के न्याय पूर्ण पक्ष की बलि चढाकर निष्कलंक बनाते है। कौरवों का अन्न खाने के कारण द्रोणाचार्य द्रोपदी वस्त्रहरण के समय कठपुतली बनते है। प्रेसिडेण्ट की कृपा भोगने के कारण अरविंद अनुराधा के चीरहरण का न्यायपूर्ण प्रतिकार नहीं कर सका। सुविधा वे उनके भीतर के मनुष्य को नपुंसक बना दिया। बिंब-प्रतिबिंब भाव से घटित होने और समानांतर दृश्य विधान के कारण अरविंद व्यवस्था और सुविधा के हाथों बिका हुआ द्रोणाचार्य साबित होता है। व्यवस्था के हाथों में बिके हुए द्रोणाचार्य की परम्परा होने का अभिशाप आधुनिक समाज व्यवस्था पर एक व्यंग बन जाता है। यही नाटककार का मूल कथ्य है।

डॉ. प्रकाश जाधव ने इस कृति के संबंध मे कहा है - "समानांतर कथाबीजों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब की साकार भावना "[१७] परंतु बिंब-प्रतिबिंब का सा रस शिल्पिक ढाँचे में नही उतर पाया है। श्री जयदेव तनेजा लिखते है "........ परंतु अरविंद और द्रोणाचार्य के समय को बहुत दूर तक घसीटने तथा अत्याधिक मुखरता और पुनरावृत्ति के कारण नाटक का समग्र प्रभाव कम हो गया है। "[१८] लगभग सौ पृष्ठों की इस रचना में द्रोणाचार्य की कथा के लिए लगभग ३१ पृष्ठ दिए गये हैं, साथ ही सारे पात्र समानांतर स्तर पर सच नहीं उतरते। अरविंद-द्रोणाचार्य, लीला-कृपी के जोड़े किसी हद तक समानांतर है, परंतु चंदू न अर्जुन के न एकलव्य के तो अनुराधा न द्रौपदी के समानांतर उतरती है। प्रेसिडेण्ट के समानांतर भीष्म को नहीं माना जा सकता। अतः बिंब-प्रतिबिंब का दृष्टिकोन या समानांतरता का कुछ हद तक ही मूल्यांकन किया जा सकता है।

उपर्युक्त मतों के देखने के बाद निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, विद्वानों के मतानुसार कुछ त्रुटियों के पाये जाने पर भी नाटक के समुचे प्रभाव को देखते हुए इस कथावस्तु को सफल ही कहा जा सकता है।

३. पात्र और चरित्र-चित्रण :

मैथ्यु अरनाल्ड ने- काव्य अथवा साहित्य को जीवन की आलोचना कहाँ है। जीवन का यह प्रतिबिंब साहित्य की अपनी विशेषता है। नाटक की दृश्यात्मकता के कारण यह जीवन विविध पात्रों के माध्यम से दर्शकों के सामने साकार हो उठता है। उन्हें प्रभावित कर जीवन के बारे में सोचने के लिए मजबूर करता है।

नाटको में घटनाओके आधार पात्र रहते हैं। प्रमुख पात्र 'नायक' कहलाता है। वह कथा का नेता होता है। नायक कथा को फल की ओर अग्रसर करता है। वही फल प्राप्ति का अधिकारी भी होता है। नायक की पत्नी या प्रेमिका 'नायिका' कहलाती है। नायक सर्वगुण संपन्न होना चाहिये । किन्तु नायक - नायिका सम्बन्धी आधुनिक दृष्टिकोण बदला हुआ है। आज साधारण से साधारण व्यक्ति नाटक का नायक बन सकता है। उपन्यास की तरह नाटक में भी चरित्र - चित्रण रहता है। चरित्र - चित्रण से पात्रों की मानसिक अवस्था और भाव - भावनाओं पर प्रकाश डाला जाता है। मुख्य पात्र का कथा के साथ घनिष्ट संम्बन्ध होता है। अत: नाटक में पात्रों के वास्तव चित्रण को महत्व प्राप्त हो गया है।

नाटककार डॉ. शंकर शेष जी ने 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में वर्तमान युग के मानव जीवन के साथ प्राचीन महाभारतीय जीवन को जोड़ने का अनूठा प्रयास किया है। दो अलग युगों के बीच पाये जानेवाली 'शिक्षा' की मुलभूत समस्याओं को उसके उद्देशों को प्रस्तुत किया है। इस जटिल कार्य को उन्होने निम्नांकित पात्रो के माध्यम से उद्घाटित किया है। ' एक और द्रोणाचार्य' नाटक में दो कथाएं समानान्तर ढंग से चलायी गयी है। अत: दोन्हों कथाओं के पात्र भी भिन्न-भिन्न रहे है ।

पात्र परिचय :

वर्तमान कालीन पात्र : प्रत्यक्ष पात्र

पुरुष पात्र - अरविंद : अर्थशास्त्र के प्राध्यापक बाद मे प्रिन्सिपल ।
यदू : अरविंद का मित्र तथा सहकारी प्राध्यापक ।
प्रिन्सिपल : अरविंद के कॉलेज के प्रिन्सिपल
चंदू : अरविंद का लाडला विद्यार्थी
प्रेसिडेण्ट : अरविंद के कॉलेज के संचालक संस्था के अध्यक्ष।
विमलेन्दु : (छाया रुप मे) अरविंद का मृत सहकारी तथा नाटककार मित्र ।
पहली आवाज : सरकारी वकील ।
दूसरी आवाज : न्यायाधीश ।
तीसरी आवाज : अरविंद का वकील ।

स्त्री पात्र -
लीला : अरविंद की पत्नी ।
अनुराधा : एक विद्यर्थीनी तथा चंदू की प्रिया ।

अप्रत्यक्ष पात्र -
प्रा. सिन्हा : अरविंद का सहकारी
राजकुमार : प्रेसिडेण्ट का गुंड बेटा
प्रा. मिश्रा : अरविंद का सहकारी
मिसेल शुक्ला : लीला की सहेली, पुलिस अफसर

महाभारत कथा के प्रत्यक्ष पात्र -

पुरुष पात्र -
द्रोणाचार्य : कौरव - पांडवों के गुरु

अश्वत्थामा : (बालक तथा पुत्र) द्रोण का पुत्र
भीष्माचार्य : कौरव - पांड़व के पितामहं
अर्जुन : पंडू का तीसरा पुत्र
एकलव्य : भिल्ल राजकुमार
सैनिक : एक भागनेवाला, दूसरा आहत
युधिष्ठिर : पंडू का प्रथम पुत्र

स्त्री पात्र -
कृपी : द्रोणाचार्य की पत्नी

अप्रत्यक्ष पात्र -
नेपथ्य की आवाजें ।

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में पात्रों की संख्या कुछ जादह लगती है। अरविंद की कथा में छ: पुरुष पात्र और दो स्त्री पात्र है। कोर्टसीन मे जज, सरकारी वकील और आरोपी के वकील के रुप में तीन पात्र है। द्रोणाचार्य की कथा में आठ पुरुष पात्र और एक स्त्री पात्र तथा युध्द प्रसंग में दो अन्य पात्र है। अप्रत्यक्ष पात्रों में दो प्रधान तो दो गौण है। कुल मिलाकर २६ पात्र है।

वर्तमान कालीन पात्र :

प्रस्तुत नाटक में वर्तमान कालीन पात्रों में अरविंद, विमलेन्दु, यदू, चन्दू, प्रेसिडेण्ट, प्रिन्सिपल, लीला, अनुराधा, सरकारी वकील, न्यायाधीश और अरविंद का वकील आदि आते है। इनका अलग - अलग चरित्र - चित्रण देखेंगे-

१) अरविंद :

प्रस्तुत नाटक का नायक है अरविंद। अरविंद अर्थशास्त्र का प्राध्यापक है। वह मूलत: विवेकशील, विचारक तथा आदर्शवादी है। इससे सभी लोगों में लोकप्रिय है। अरविंद किसी भी बात मे बुरा विचार नही करता, जीवन का बारे में उसका दृष्टिकोण आदर्शवादी है। लीला अरविंद की पत्नी है। सारा परिवार अरविंद पर निर्भर है। उसके सामने जीवन यापन करने की समस्या विक्राल रुप मे खडी है। " मां कैंसर से अस्पताल में पड़ी है। विधवा बहन हर पहली तारीख को मनी ऑर्डर का इन्तजार करती है। लडके को मेड़िकल कॉलेज भेजना है। "१९ अरविंद प्रोफेशनल एथिक्स का पालन करना चाहता है, किन्तु सुविधा भोगी पत्नी तथा स्वार्थ से विकृत यदू के दबाव मे आकर उसके जीवन में नया मोड़ आता है। हर बात में मजबूर होता है। इसी कारण आदर्श और यथार्थ के बीच भयावह द्वंद्व चलता है।

प्रेसिडेण्ट का लडका राजकुमार नकल करते हुए अरविंद के हाथो पकड़ जाता है। इस मामले में चारो ओर से अरविंद पर रिपोर्ट वापस लेने के लिए दबाव ड़ाल जाता है। परन्तु आतंक चाहे शक्ति का हो अथवा अधिकारों का आत्मा को कचोटता रहता है। इसलिए मेजपर छुरा सामने रखाकर नकल करते हुए प्रेसिडेण्ट के लडके को पकडना आज अपराध है। इसी कारण व्यवस्था के समर्पित आत्मा यदु अरविंद की भर्त्सना करता है - "अब तुम्हीं बचे हो साले, इमानदारी और सच्चाई की औलाद ! आराम से रहना किस्मत में किस्मत में बदा हो तब न । "२० अरविंद की पत्नी लीला भी कहती है - "इन्हे समझाना बेकार है, यदू भाई , समझदारी से तो उनकी दुश्मनी है, दीवार से सिर मारते - मारते आधी उम्र कट गई। "२१ सिन्हा के अफसर के बेटे का अंक बढ़ाने की सिफारस लीला की है, लेकिन अरविंद उसे नहीं मानता। लीला के अनुसार सिन्हा के माध्यमसे ही अरविंद को यह नौकरी मिली है। अस्पताल में उनकी मां को भरती कराया गया है। अत: वह उसे एहसान फरामोश भी करती है। वह भी रिपोर्ट वापस लेने के लिए विवश करती है। अरविंद अपने ही निर्णय पर आड़िग रहता है, उपरोध से लीला कहती है - तुम जाकर बैठो हरिश्चंद्र के खाली आसन पर ।" २२ सचाई के कारण आदमी को बहुत दु:ख उठाना पडता है। अरविंद, लीला, यदू , प्रिन्सिपल, प्रेसिड़ेण्ट इन सब के

दबाव के कारण अरविंद विवश हो जाता है। उसकी आत्मा मजबूर होकर कराह उठती है - "अब किस - किस से डरुँ ? कॉलेज को दुकान की तरह चलानेवाले उस प्रेसिडेण्ट से ? ..... अंगूठा छाप कमेटी मेंबरों से .... चुगली खानेवाले अपने सहयोगियों से .... उस लिजलिजे, बेहूदे प्रिन्सिपल से ? .... विद्यार्थियों से ....।" २३

चदू अरविंद का लाडला शिष्य है। प्रो. मिश्रा ने नकल के झूटे आरोप में उसे फँसाया है। अत: अन्याय के विरुध्द चंदू लडना चाहता है, उसका प्रेरणाश्रोत अरविंद ही है। राजकुमार के रिपोर्ट दबाई जा रही है, चंदू की झूठी रिपोर्ट युनिव्हर्सिटी भेजा जा रही है। अंत नें अरविंद सुविधा और सुरक्षा के आकर्षण से चन्दू जैसे न्यायोचित पक्ष का गला घोंटकर अपना राजमार्ग निष्कंटक बना देता है। उसमे उसे जरा भी हिचकिचाहट महसूस नही होती। अरविंद के ह्रदय मे आदर्श और यथार्थ का संघर्ष है लेकिन परिस्थिति की विवशता के सामने कुछ भी नहीं कर सकता। चंदू के चले जाने का बाद प्रेसिडेण्ट आता है, अपनी राजनैतिक प्रतिमा कलंक न हो, इसलिए बेटे की रिपोर्ट के लिए अरविंद को धमकाता है। उसको प्रिन्सिपल बनने का प्रलोभन दिखाता है।

अब लीला अरविंद को प्रिन्सिपल बन जाने की सलाह देती है। राजकुमार और उसके साथी अरविंद को मार डालने की योजना बना रहे है।, इसलिए यदू समझाता है कि,अरविद प्रिन्सिपल बनकर उसके लिए वाईस - प्रिन्सिपली का रास्ता बनायें। पत्नी तथा यदू के हठ के कारण अपनी सच्चाई को भूलकर अरविंद प्राध्यापक से प्रिन्सिपल बना जाता है। और हमेशा चिंता मे डुब जाता है।

प्रेसिडेण्ट के लडके राजकुमारने कॉलेज गार्डन में अनुराधा नामक विद्यार्थिनी पर बलत्कार करने की कोशिश की थी, जिसका एकमात्र गवाह अरविंद है। लेकिन प्रेसिडेण्ट का अन्न खाने के कारण और प्रेसिडेण्ट की कृपा भोगने के कारण अनुराधा के चीरहरण को वह नपुसक की तरह केवल देखता रहता है। मामला और बद जाता है, अनुराधा अत्महत्या करती है क्योंकि अरविंद ने चंदू को धोका दिया था। अत: उसका प्रिन्सिपल पर विश्वास नही है। इस समय प्रेसिडेण्ट आता है और बेटे की केस को रफा-दफा रखने की बात करता है। उनका कहना न माना तो, उसे जेल भिजवाने का डर दिखाता है। अरविंद अपने निर्णय पर अड़िग रहकर अनुराधा को साथ देना चाहता है। तभी १५ हजार गबन का अरविंद पर आरोप लगाया जाता है। अरविंद घबरा जाता है।

इन सब घटनाओं के कारण अरविंद प्रिन्सिपल पद का इस्तीफा लिख देता है। उसके मन में प्रेसिडेण्ट के प्रति घृणा पैदा होती है। उसकी मौत की योजना उसके मन में आती है। उसी समय ही प्रेसिडेण्ट क्लिफ से गीरकर मर जाता है, परन्तु उसे धक्का देकर मार डालने के आरोप में अरविद को पकड लिया जाता है। उस घटना का एकमात्र दर्शक चंदू है। अरविंद का चंदू की गवाही पर विश्वास है कि वह उसे बचाऐगा और बताऐगा की वह हत्या नही, आक्सिडेण्ट था।

परन्तु कोर्ट की कार्यवाही में चदू अनुराधाका पत्र पेश करता है, जिसमें उस पर बीते सभी बातें लिख दी थी। उनके अधार पर अरविंद के चारो - ओर आरोप के शिकन्जे और भी दृढ़ हो जाते है। "क्या अरविंदने प्रेसिडेण्ट को धकेला था ? । "२४ इस प्रश्नपर चंदू " हो सकता है।"२५ इतना ही उत्तर दे चुका था। अरविंद विमलेन्दु से पूछता है कि, चंदू सच क्यों नहीं बोला ? तब विमलेन्दु अपने द्रोणाचार्य नाटक को याद करने के लिए कहता है। इन्ही घटनांओं से अरविंद व्यवस्था एवं सुविधा के हाथो बिका हुआ द्रोणाचार्य साबित होता है। इसलिए विमलेन्दु अरबिंद को - "व्यवस्था और सत्ता के कोड़ो से पीटा हुआ द्रोणाचार्य - इतिहास की धार में लकडी की ठूंठ की तरह बहता हुआ, वर्तमान के कगार से लगा हुआ - सडा गला द्रोणाचार्य व्यवस्था के लाईट हाऊस से अपनी दिशा मांगने वाले टूटे जहज - सा द्रोणाचार्य । "२६

प्रो. अरविंद सच्चाई को किसी भी किमत पर बेचने के लिए तैयार नही है। वह अपनी हिफाजत के कारण अपनी आचार-संहिता भूल बैठता है। "एक ओर अरविद हालातों से समझौता करने के लिए विवंश है। दूसरी ओर प्रोफेशनल एथिक्स का सवाल है।" १३ लेखकने शिक्षक की विवशता के सत्य रुप पर प्रकाश ड़ाला है। अरविंद के परिस्थिति

की वजह उद्वेलित मानसिक पतन का कारण बन जाता है। प्रथमत: अरविंद का यहा आदमी रुप हमारे मन को भाता है, और उसकी त्रासदी पिघलती है, जो विचार करने के लिए बाध्य करती है।

इस प्रकार अध्यापक अपने देश तथा समाज के भविष्य की हत्या का कारण बनाता है। नाटककार हमे बताना चाहता हैं कि, हमेशा युग बदलते है, परिस्थितियाँ बदलती है, परन्तु जीवन मूल्य और चिरन्तन सत्य नहीं बदलता। मध्यमवर्गीय व्यक्ति के समझौतावादी चित्र की विडम्बना और त्रासदी को नाटकीय अभिव्यक्ती देने के लिए डॉ. शंकर शेष नें आज के एक प्रायवेट कॉलेज के आदर्शवादी तथा संवेदनशील प्रो. अरविंद के बाह्य–जीवन के उत्थान और अंन्तरिक जीवन के पतन की करुण कहानी प्रस्तुत की है। "सत्ता से जुडना यदि एक और व्यक्ति को पद सम्मान, सुविधा और सुरक्षा देता है, तो दूसरी और वह उसे चरित्रिक, आत्मिक और नैतिक दृष्टि से खोखला और नपुसक भी कर देता है। " २७

नाटककार के अनुसार एक इमानदार और सच्चा व्यक्ति अपने अस्तित्व पर चारों ओर के तनाव के कारण मुक्ति के लिए विवंश होकर आत्म समर्पण करता है। समाज के इस बुरे चक्रव्यूह का भेद करना असंभव होता है। जयदेव तनेजा लिखते हैं, " अध्यापक के साथ इन स्थिति की एक और विडम्बना यही भी है कि, उसकी पतन केवल उसका न होकर आनेवाली पीढी का भी पतन है। उसकी मानसिक स्थिति और सिसकती आत्मव्यथा को बड़ी विशेषता . के साथ उजागर किया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, पक्षपात, असंगति-विसंगति के मध्य झूलते जीवन आदर्श, शिक्षक समुदाय के पंगु आचरण, असाहाय, बेबस और अपाहिज चारित्र्य अरविंद के माध्यम से दिखाया है । "२८ नाटककार शंकर शेष ने शिक्षा और राजनीति में चले कृष्ण कृत्यों का पर्दाफाश किया है। "२९ इस तरह अरविंद का चारित्र्य सफलता से चित्रित हुआ है।

२) लीला :

लीला प्रो. अरविंद की पत्नी है। उनकी शादी को अब १६ साल हो गये है। इस अवधि में लीला को अपने पति के साथ अनेक यातनाएं भुगतनी पड़ी। लीला घरेलू सामाजिक स्थिति की चित्रण करती हुई कहती है – "कभी सोचा ? इस घरमें अकेले कौन जिया है ? तुम केवल तुम हम लोगों को कभी अपने अस्तित्व की जानकारी ही नही हुई। तुम तय करते रहे कि, हमं लोग कैसे जिये। और हमं लोग उसी तरह जीते रहे। लेकिन अब यह नहीं होगा । "३० हम परिवारिक वातावरण को ध्यान दें तो, आदर्श के लिए अरविंद कुछ भी भोगने के लिए तैयार है। लीला जो चारित्रिक बल के आधार पर मनुष्य की महत्ता मानती है, वह उसकी समझ की बहार है। लीला अरविंद से कोई बातों में समझौता नही कर पाती। उसे अपने जीवन में सुख-सुविधा आदि बाहारी बातों को जादा महत्व है।

मूलत: अरविंद विवेकशील और आदर्शवादी होने के कारण लीला की कोई भी बात नहीं मानता । अत: लीला अरविंद को घरेलू बातों पर बेरुखे ताने दे रही है – "इतना समझाने की क्या तुम्हारी उम्र रह गयी है ? "३१ लीला अरविंद को अच्छी तरह पहचान नहीं सकी। वह अपने आदर्श पति के जीवन को नपुसक-सा बन देती है। हर एक बात मे उसका अपमान करती है। सभी लोगों की तुलना में अपने पति को वह अव्यवहारवादी मानती है। लीला व्यवहारवादी भी है, उसकी दृष्टि से अरविंद थोड़ा हठी भी है ।

लीला और यदू दोनो की प्रवृत्ति एक है। स्वार्थ आदमी को अंधा बना देता है। विवेक के बारेमें सोचने भी नहीं देता। ऐसे लोगों को अपनी सभी बातें सही लगती हैं। असाधारण बातपर ध्यान नहीं देते ओर उसके परिणामो के बारेमें सोच भी नही सकते। उन्हे अपने परिश्रम पर विश्वास नहीं है। हर बात मे लीला अरविंद को रोककर गलत रास्तेंपर चलने के लिए प्रेरित करती है। "तुम्हे यह नौकरी किसके कारण मिली ? यह मकान ? अस्पताल मे सुविधाएं कौन दिलवा रहा है ? दो नंबर बढ़ा ही देते तो कौनसा आसमान फट जाता। "३२ नंबर बढ़ाने की बात लीला की दृष्टि से कुछ भी नहीं है। कभी-कभी लीला मूल्यहीन होकर अरविंद को फटकारती रहती है – "नही बढ़ाये नंबर ? तो लपककर एहसान क्यों लेते हो ? ..... क्या तुम्ही अकेले ने दुनिया को सुधारने का

ठेका ले रखा है ? "३३

अरविंद के अध:पतन का एक मात्र कारण शिक्षा अनाचार न होकर, लीला की सुविधा भोगी प्रवृत्ति ही अधिक जिम्मेदार है। लीला प्रिन्सिपल स्वीकारने के लिए अरविंद को विवश करती है। अरविंद प्रिन्सिपल बना देख, लीला को बहुत खुशी होती है। किन्तु अरविंद को चैन की साँस नहीं मिलती। इसका लीला को खयाल नहीं है। लीला अनुराधापर किये गये बलात्कार के प्रयत्न को शांति से सुनाती है। फिर भी अपनी सुविधा की ओर ही ध्यान देती नजर आती है - " मैं सोचता था, तुम बलात्कार की बात सुनकर तिलमिल जाओगी । राजकुमार को कठोर-से-कठोर सजा देनेपर मुझे विवश कर देगी। पर उल्टे तुम .... क्या सुविधाओं ने तुम्हारी संवेदना को इतना मार डाला है ?"३४ अनुराधा के बारे में पहले गांभीर्य नहीं दिखाती, बाद में पछताती रहती है। "अब लडकी का क्या होगा ?" ३५ अन्य क्षेत्र मे ऐसी नारियाँ हो सकती किन्तु एक प्रोफेसर की जिंदगी मे ऐसी स्त्री का मुकाबला करना हम सोच भी नहीं सकते। इसी तरह राजकुमार को रस्टिकेट की बात अरविंद करता है तब लीला कहती है - " मै कहती हूँ, न्याय देने के लिए तुमको जज किसने बना दिया ? कभी कहना माना है मेरा ? कितनी बार कहा इतने पचडे में मत पडा ? "३६

लीला की सुविधा भोगी वृत्ति के बारे में उसका यह कथन भी काफी है। " .... अपनी गाडी ले जाएंगी या सरकरी ? ...... सौ आम को आचार मे कलौंजी कितनी डाली अपने ? सौ ग्राम। मै तो एक सौ पचीस डालता हूँ । नहीं - नहीं तकलीफ क्यो उठाती है ? अपना चपरासी भेज दूंगी ...... अच्छा - अच्छा नमस्कार । "३७ उपरयुक्त कथन से लगता है कि लीला को सुविधा के हावस ने उसके पति को जेल की दीवरो में ठूँस दिया है, यह वह जानेगे भी या नहीं पता नही। फोन पर चलनेवाली उसकी बातचीते उसके समग्र व्यक्तिमत्व पर नाटककार ने प्रकाश डाला है। लीला के कारण अन्त मे अरविंद अपना खुद का अस्तित्व खो बैठता है और लाचार हो जाता है।

नाटककार शंकर शेष ने शिक्षा के मूल उदेश पर कैसे कुटराघात किया जाता है, इसपर प्रकाश ड़ाला है। सुखसुविधा के कारण आदमी अपना विवेक खो बैठता है, इसका उत्तम उदाहरण है - ' लीला' । नाटककारने चलते - चलते नारी की हठ धर्मिता की ओर भी संकेत कर दिया है। जो बालहठ, राजहठ और तिरियाहठ की यथार्थता का ही संकेत देता है। अन्य कारणों के होते हुए लीला ही अरविंद के अध:पतन का कारण होती है। अत: लीला अरविंद की सहधर्मिणी की अपेक्षा खलनायिका के रुप में देखी जा सकती है।

३) अनुराधा :

अनुराधा एक गरीब परिवार की लडकी है। प्रो. अरविंद की छात्रा है और चदू की प्रेमीका है। एक दिन अनुराधा अपने प्रेमी का इन्तजार कॉलेज गार्डन मे कर रही थी। उस समय प्रेसिड़ेण्ट के लडके राजकुमार ने कॉलेज गार्डन में अनुराधापर बलात्कार करने की कोशिश की थी। जिसका एकमात्र गवाह अरविंद है. इसलिए अनुराधा अरविंद के पास शिकायत करती है।

अनुराधा का परिवार बहुत गरीब है, अत: उसके माँ - बाप चुप बैठने में ही इज्जत है, ऐसा मानते हैं। अखबारवालों पर ही उनका विश्वास नहीं है। राजनीति का सर्वसाधारण लोगों पर ही दबाव रहता है। ये लोग प्रेसिड़ेण्ट से घबराते हैं। प्रेसिडेण्ट के सामने अरविंद ने भलाही कहा हो कि, अनुराधा नें स्वयं शिकायत की है, तो भी अरविंद ने ही वह उससे लिखवायी है। उसका साथ देने का आश्वासन दिया है, इसीसे अनुराधा लडने पर तुली है। उसे लगता है, अब जीने में क्या अर्थ है। अनुराधा भी इज्जत से जीना चाहती है। इसी कारण उसका नारी रुप जागृत होता है। वह अरविंद के भरौसे पर न्याय पाना चाहती है, फिर भी आशंकित है।

अरविंद भी प्रथम अनुराधा का साथ देना चाहता है, लेकिन बाद में प्रेसिडेण्ट उसपर १५ हजार के गबन का आरोप लगाकर दबाव डालता है। चन्दू के बारे में भा अन्याय हुआ था, अत: अनुराधा आशंकित है। क्योंकि अरविंद मौका पाते ही

बदल सकता है। इसलिए अरविंद से कहती है, - " तो मैं आपके शब्दों पर विश्वास करती हूँ। इस मामले में आप ही एकमात्र गवाह है। आप बदल गये, तो मैं कहीं मुहं दिखाने लायक नही रहूंगी। और तो और वह भी मुझसे घृणा करने लगेगा। "[३८] अरविंद उसे विश्वासपूर्वक साथ देने की बात करता है किन्तु इस प्रेसिडेण्ट की बुरी राजनीति के सामने उसे झुकना पड़ता है। अत: अरविंद अपना रुख बदलता है। अरविंद ने आये हुए परिवर्तन देखकर अनुराधा निराश होती है। अरविंद उसे शिकायात वापस लेने की सलाह देता है। अनुराधा का नपुसक बुध्दिवादी अरविंद ने विश्वासघात किया, बेचारी अनुराधा कहीं की नहीं रही। उसके सब भ्रम टूट गये। इसलिए अपने निर्णयपर अडिग रहकर खुदकुशी के बारे में सोचती है। अनुराधा ट्रक ॲक्सिडेण्ट में अपने आप को समर्पित कर देती है।

हमारे समाज में इस तरह कितनी ही स्त्रियों को बलिदान देना पडता है समाज का कोई भी व्यक्ति ऐसे समय उन्हे साथ देने के लिए तैयार नहीं होता। यदू के कथन में नाटककार हमारी पुरुष प्रधान संस्कृति पर प्रकाश डालता है। पुरुष की स्त्री जाती की तरह देखने की दृष्टि कितनी नीच है, भी दिखाया है। सर्वसाधारण लोगोंपर राजनीति का दबाव रहता है, इस तथ्य को भी लेखकने उजागर किया है। अनुराधा में लेखक ने नारी के शास्वत रुप को प्रकट करके, एक आदर्श प्रस्तुत किया है। अनुराधा एकनिष्ठ, दृढ निश्चयी, स्वाभिमानी अन्याय के विरोध मे आवाज उठाने के कारण उसका व्यक्तित्व और भी निखर जाता है।

४) विमलेन्दु :

विमलेन्दु के चरित्र चित्रण के सम्बन्ध में नाटककार डॉ. शेष की कोई एक निश्चित भूमिका स्पष्ट नही होती है। अधिक तर स्थानों में अपने उसे प्रेतात्मा के रुप में प्रस्तुत किया है, तो कहीं - कहीं, विमलेन्दु अरविंद के मानसिक संघर्ष को उजागर करनेवाला अन्तरमन का एक प्रतीक भी लगता है। इन दोनों का विवेचन निम्न रुप से देखा जा सकता है -

विमलेन्दु प्रो. अरविंद का सहपाठी रहा है। विमलेन्दु ने जोश में आकर नकल पकडने की मूर्खता की थी। परिणाम स्वरुप उसे सजा - ए - मौत मिली थी। गुंडो नें उस पर आक्रमण कर दिया था। लोगो ने इसे आत्म-बलिदान समझाया था। आत्मत्याग और आदर्श समझा था। उस समय विमलेन्दु की मरने की उम्र नही थी। इसलिए उसकी आत्मा अतृप्तसी लगती है। वह मृत्युपर दु:खी लगता है - "तीन साल पहले शादी हुयी थी। फूली - सी - बच्ची। पत्नी का उबलता हुआ प्यार नाटक की दुनिया में नाम पैदा करने की ख्वाहिश। सब धरा-का-धरा रह गया।"[३९] उसके मरने के पश्तचात उसकी बीबी साल भर से नौकरी की तलाश में दर-दर भटकती है। सब आश्वासन देते है। कोई नौकरी नही देता है। अब उसकी जवान विधवा पत्नी छोटी सी नौकरी पर अपना और बच्ची का पेट पाल रही है। कभी-कभी विमल्निदु की याद में रोती भी है। पर लोग उसे चैन से कहां रहने देते है। प्रमोशन की लालच दिखानेवाले बूढ़े अफसर से उसकी टपकती लार से बचने के लिए उसने अब छोड दिया है। इसलिए विमलेन्दु कहना है - "केवल शरिर सत्य है, आत्मा - बात्मा सब बकवास है।"[४०]

विमलेन्दु अरविंद के पास हमेशा बिना बुलाए आ जाता है। नाटककारने प्रेतात्मा का बारे में विमलेन्दु को प्रस्तुत किया है। विमलेन्दु हंसता हुआ अरविंद से कहता है - " प्रेत .... ? हां, प्रेत। जिन्दा प्रेतों के बीच एक और प्रेत। "[४१] विमलेन्दु न्यायप्रिय होने पर भी सत्तापिपासु लोगों के कारण उसकी मौत हो गयी है। फिर भी नाटक मे उसका स्वतंत्र अस्तित्व मौजुद है। समाज में आज लोग जिन्दा लाश की तरह जीते है। कहीं बतो में आंखो से देखकर, कानों से सुनकर भी, अन्याय के विरुध्द उनका खून खौल नहीं सकता। इसलिए विमलेन्दु समाज के लोगों पर व्यंग्य कसता हुआ दिखाई देता है। विमलेन्दु न्यायप्रिय है, लेकिन फिर भी यदू और लीला का भाई लगता है। वह भी अरविंद से कहता है - "उस प्रेसिडेण्ट से समझौता करो, प्रिन्सिपल बनो।"[४२] अरविंद को अपने स्वार्थ के लिए बुरा मार्ग

करने के लिए प्रेरित करता है। वह नाटककार भी था और कथा सुत्रों के अनुसार द्रोणाचार्य की कथा विमलेन्दु की है और वह उतना आदर्शवादी भी नहीं लगता। प्रेत के रुप में या शरीराकृति के रुप में उसका जो व्यक्तित्व उभरता है, वह आदर्शवादी नही है। वह अपना मुक्त जीवन और मृत्यु उपरान्त अपनी पत्नी बच्ची की दुर्दशा कहकर अरविंद को भयभीत करता है और उसके अध:पतन का कारण बनता है। अरविंद को बार-बार द्रोणाचार्य की याद दिलाता हैं - "याद करो, अपना नाटक , याद करो ... ।"[४३] विमलेन्दु आपनी मृत्यु के बाद भी, सजीव मानव की तरह अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है, जो प्रेत कल्पनासे मेल नही खाती।

चन्दू के बारे में अरविंद से विमलेन्दु कहता है - "कुल मिलाकर शिक्षक के रुप में तुमने उसे क्या दिया ? "[४४] विमलेन्दु ऐसे प्रश्न पूछकर अरविंद को जागृत करता है, तो कहीं-कहीं जगह गलत रास्ते पर लाने का प्रेरित करता है उसका प्रेम अरविंद की अन्तरात्मा को झकझोरता है - "यदि व्यवस्था उसे अपने इशारे पर भौंकनेवाला कुत्ता बनाना चाहती है, तो भौंको, कुत्ते के पिल्लों जन्म दो, चन्दू और युधिष्ठिर मत पैदा करो, राजकुमार और दुर्योधन पैदा करो। "[४५]

अरविंद की किंकर्तव्य विमूढ़ अवस्था में जब विमलेन्दु आता है, तब वह आरविंद के ही अंतस्थ चेतन का प्रतीक लगता है। जैसे - आरंभ मे लीला अरविंद के सामने पत्नी के रुप में या आदर्श के प्रतीक चन्दू में से एक को चुनने की समस्या खड़ी कर देती है, तब बौखलायी अवस्था में वह यदू को निकाल देता है, और विचार मग्न स्थिति में बैठा रहता है। इसी समय विमलेन्दु आता है। भले ही उसे प्रेतात्मा के रुप प्रस्तुत किया गया हो तो भी अरविंद को नही लगता है - चंदू का साथ देने में विमलेन्दु की तरह उसकी भी हत्या हो सकती है। इस हत्या को भले ही अरविंद और सहपाठीयों ने आत्मत्याग नकल के विरोध में बलिदान कहां हो, उसकी बीबी और बच्ची की सहायता करने का आश्वासन दिया हो, तो भी किसी ने कुछ नहीं किया था। यह यथार्थ उसके सामने प्रकट होता है। उसकी मौत के बाद लीला और बेटी की यही स्थिति होने की संभावना उसके सामने उजागर होती है। जिसे नाटककार विमलेन्दु के प्रेतात्मा के माध्यम से अभिव्यक्त दी है।

दूसरे स्थान पर अनुराधा का मामला जब उभरता है तब अनुराधा का साथ देने के लिए वह इस्तीफा देनेके लिए भी तैयार है। मानो चन्दू से साथ किये गये अन्याय का प्रय:चित्त करना चाहता हैं परन्तु दूसरी ओर नौकरी कि सिवा वह स्वयं और कुछ भी नही सकता है। उसका अंतरमन एक ओर अनुराधाके मामले में जिम्मेदार नहीं मान रहा है। जब अनुराधा का पिता भी इस मामले को उठाना नहीं चाहता है, तब वही अकेला उसकी तुलना क्योंकि जाय अत: लिखा हुआ इस्तीफा फाड़ ड़ालने की प्रेरणा उसमे बलवती होती जाती है।

तीसरे स्थान प्रेसिड़ेण्ट की मौत के बाद परिस्थितिजन्य सबूतों के आधार पर प्रेसिड़ेण्ट की हत्या के मामले में उसे गिरफ्तार किया गया है। अरविंद निरप्राधी है। इसका एकमात्र साक्षीदार चंदू है। अदालत मे चंदू क्या कहेगा ? इसी चिंता मे डूबे अरविंद के सामने विमलेन्दु प्रकट होता है । एकलव्य पर अन्याय होने पर भी उसने अंगूठा कटवाया था, क्या उसी तरह चंदू अन्याय होने पर भी अपने गुरु अरविंद को भी बचाएगा या धर्मराज की तरह न झूट, न सही ऐसा सत्याभास निर्माण कर उसे शिकंजे मे जकड़ेगा इसका पता नही है। विमलेन्दु के कथन के अनुसार अर्थात अरविंद अंतरमन के अनुसार दूसरी बात ही होने की अधिक संभावना है। और वही आदालत में घटती भी है।

उपरयुक्त प्रसंगो से ऐसा लगता है कि, विमलेन्दु प्रेतात्मा की अपेक्षा अरविंद के अंतचेतन को मानसिक संघर्ष को प्रकट करनेवाला पात्र है। परन्तु अन्य स्थानों पर त्रिकालज्ञानी प्रेतात्मा की तरह वह अनेक बातों को और घटनांओ को उजागर भी करता है। अत: नाटककारने विमलेन्दु के चरित्र का उपयोग दो स्तरो पर किया हो ऐसा ही मानना औचित्यपूर्ण होगा।

५) प्रेसिडेण्ट :

प्रो. अरविंद कॉलेज की संचालक संस्था के अध्यक्ष है। वह अपनी इच्छा के अनुसार सभी पर दबाव डालता है। अपनी बात न माननेवालों को वह पदच्युत या बेइज्जती करने का भय दिखाता है। प्रेसिडेण्ट कॉलेज को अपनी जायदाद समझकर उसपर अधिकार जताता है। अपने आप को सभी को अन्नदाता मानता है। उसके पास राजनीति सभी गुण मौजुद है। उसे लगाता हैं कि अपराध भले ही हो जाय, तो उससे बचा भी जाएं अपनी प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने के लिए समाज के सामान्य लोगों की बली चढ़ाना है। ऐसी उसकी घिनौनी प्रवृती है।

प्रेसिड़ेण्ट अपनी राजनैतिक प्रतिमा कलंकित न हो, इसलिए वह बेटे की नकल की रिपोर्ट दबाना चाहता है। ऐसा न होने पर कॉलेज बंद करने का डर दिखाता है। अरविंद को अपदस्थ करने का भय दिखाता है तथा प्रिन्सिपल पद का लालच भी दिखाता है। अरविंद को सभी सुविधाओं से वंचित करने का डर दिखाकर उसपर दबाव ड़ालता है। पर अपनी इमेज खराब नहीं करना चाहता क्योंकि उसे मंत्रि-मंडळ में लेने की बात चल रही है। परस्थिति के अनुसार अपनी मान-मर्यादा के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। उसे सत्ताने अंधा बना दिया है। इसलिए सभी को वह गलत रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी प्रकरण में मौका हाथ से जाने नहीं देता क्योंकि राजनीति की दृष्टि से अपनी मौत बचता है। यह उसकी राजनीति का दावपेंच तथा होशियारी है।

विवेकशील अरविंद हर मामले में प्रेसिडण्ट को रोकता है किन्तु परिवार की हिफाजत के लिए विवश होना पडता है। उसकी अवस्था पिंजडे में बंद पंछी की तरह होती है। प्रेसिडेण्ट उपरोध से धर्मराजा कहते है। आजकल हमारे समाज में अरविंद जैसे लोगों को जगह है ही नहीं। भले ही उनका न्याय का पक्ष क्यों न हो ? उसका कहना कोई नही मानता तथा सभी उसको ही दोषी ठहराते है। लीला, यदु, विमलेन्दु सब लोग प्रेसिडेण्ट का साथ देने के लिए ही कहते है। सभी लोग अपनी-अपनी सुविधा देखते है, अपना स्वार्थ देखते है और विवेक को, स्वाभिमान को, खुद के अस्तित्व को खोते है।

प्रेसिडेण्ट एक जगह अपने बेटे के बारे में अरविद से कहता है - " उसकी बेहूदा हरकतों की मुझ से शिकायत क्यों नही की गयी ? आप लोगों के किस बात का डर था। "[४३] प्रेसिडेण्ट जानता है कि अपना बेटा गुण्डा, आवारा, बदमाश है, फिर भी ढोंग करता है। सभी दोष दूसरों को मत्थें पर मढकर, खुद चमड़ी बचाव का धोरण स्वीकारता है। अंत में एर क्लिफ से गिर कर उसकी मृत्यु होती है। बुरे कर्मो का फल बुरा ही मिलता है। प्रेसिडेण्ट की प्रवृत्ति अत्यंत घिनौनी लगती है। इस तरह लेखक ने प्रेसिड़ेण्ट के चरित्र पर प्रकाश ड़ाला है।

६) प्रिन्सिपल :

अरविंद कॉलेज के प्रिन्सिपल है। लेकिन नाटककार ने उनका नाम बताया है, न उनकी परिवारिक जानकारी दी है। मानो वह भ्रष्टाचार का प्रतीक ही बनाया गया है। यह एक जिम्मेदार व्यक्ति होकर भी नकल करते पकड़ना सीनियर लोगों का काम नही है, ऐसा मानता है। प्रिन्सिपल भी अरविद को रिपोर्ट वापस लेने के लिए तैयार कर रहा है। इसलिए वह लीला को समझाते हुए कहता है - " इस घटना से हो सकता है कि, प्रेसिडेम्ट बंद कर दें। नौकरी करनी है तो लात भी खानी पड़ेगी।"[४७] नहीं तो सभी को बेकार बनना पडें। अत: सभी को अपनी रोटी की फिक्र लगी हुई है। चुंगी नाके के क्लर्क पद से प्रिन्सिपल के पद तक अपने चढ आने की बात भी प्रिन्सिपल बताते है। ३६ साल उन्होंने यही किया। अत: अरविंद को भी समझा-बुझाने की सलाह देता है।

प्रिन्सिपल भी महसूस करता है कि जो हो तहा है, यह शिक्षा मंदिर में नहीं होना चाहिए। लेकिन उसका विरोध भी अरविंद के विरोध की तरह मिड़ल क्लास नपुसक जोश ही रह जाता है। व्यवस्था के स्वर्ण पिंजरे में कैद होकर वह पंख फडफडा रहा है -

'जल्लाद (व्यवस्था) से भी कहीं विरोध किया जाता है। मुझे तो सुबह से शाम तक गाली देता है।/ गधा और उल्लू का पट्ठा कहता है .... पर क्या करुं .... सुनता हूं ..... सुनूंगा नही तो जाऊगा कहां .... नौकरी जो करनी है। "४८ समझौता करना मध्यवर्ग की नियती है। प्रिन्सिपल विमलेन्दु की तरह न्याय का पक्ष लेकर अपने-आपको बरबाद करना नही चाहता - "घर अंधेरा रखकर मंदिर में दिया जलाने से कोई फायदा ? "४९ अत: वह अरविंद को समझौते की सलाह देता है।

आधुनिक युग में जीवन मूल्यों का संकट गहराता जा रहा है। मूल्यहीन के इस युग में मानव बेबस असहाय और स्वार्थी बने हैं। अपनी सुख सुविधा के सामने प्रिन्सिपल की लाचार प्रवृत्ति अपने अस्तित्व के बारे में भी नहीं सोचता। इस प्रकार प्रिन्सिपल एक बुरी प्रवृत्ति के प्रतीक रुप में पंगु आचरण करनेवाला साबीत होता है।

७) चन्दू :

अरविंद का लाडला शिष्य, चंदू नेककाम, स्वाभिमानी और होशियार छात्र। वह विद्यार्थी प्रतिनिधि है, अत: अन्याय के विरुध्द आवाज उठाना चाहता है। अनुराधा नामक लडकी से वह प्यार करता है। कॉलेज में प्रो. मिश्राने नकल के झूठे आरोप में उसे फैसाया है। चंदू अरविंद के पास आकर घड़ी हुई घटना बताता है - उसके सामने ही प्रेसिडेण्ट का लडका छुरा सामने रखकर नकल कर रहा था। प्रो. मिश्रा की ड्यूटी उस कमरे में थी। वह उसका नकल का परचा इसके पास आया तो, चंदू ने उसे प्रोफेसर तो देने उठाया, तभी मिश्रा ने उसे पकडा और रिपोर्ट कर दी। "मैं बहुत चीखा-चिल्लाया, सर प्रोफेसर मिश्रा नहीं मानें ।" ५०

अब उसकी रिपोर्ट युनिर्सिटी भेजी जा रही है और राजकुमार की दबाई जा रही है। चंदू के पिता प्रेसिडेण्ट के राजनीति के विरोधक है चंदू विद्यार्थी प्रतिनिधि के रुप में चाहता है कि, राजकुमार की रिपोर्ट भी युनिर्सिटी भिजावाई जायें। चंदू आपनी पूरी ताकद लगाकर अपने साथ होनेवाले अन्याय के विरुध्द आवाज उठाना चाहता है। इस मामले मे चंदू अरविंद के भी उतनी हा जिम्मेदारी समझता है। इसे अरविंद का साथ मिलने पर जीतने का विश्वास है। नकल हमेशा के लिए बंद करना, गुंडागर्दी का दफना चाहता है। किन्तु चन्दू को अरविंद पर शक है। "क्योंकि लोग अकसर ठीक मौके पर बदल जाते है।"५१

चन्दू का अंदाज सही है। अरविंद ने यदू, लीला प्रेसिडेण्ट आदि के दबाव में आकर आपनी रिपोर्ट वापस ली है और प्रिन्सिपली पा ली है। अरविंद के भरौसे अंदोलन चलनेवाले विद्यार्थीयों पर लाठीयाँ बरसती है, चन्दू को ले जाती है। उसे कॉलेज से निकाल दिया जाता है। अरविंद और प्रेसिडेण्ट उसकी रिपोर्ट दबाते है और एक अच्छे छात्र की जिंदगी बरबाद करते है। तीन साल के बाद प्रिन्सिपल अरविंद को प्रेसिडेण्ट की मृत्यु के मामले मे फैसा दिया जाता है। तब अरविंद को लगता है - "चन्दू मुझे बचाएगा, मैंने उसपर अन्याय किया है, फिर भी मेरा शिष्य है, आखिर वह कुछ तै सोचेगा। " ५२ अरविंद को इस मुकदमे का चश्मदीद एकमात्र गवाह चन्दू है। यह मामला अदालत में जाता है।

चन्दू अनुराधा की मृत्यु के कारण पागल-सा होता है, वह खुदकुशी करना चाहता है। चन्दू की प्रोफेसर अरविंद से पुरानी दुश्मनी अनुराधा की बलिसे उसका खून खोल उठता है। तभी प्रतिशोध लेने का मौक उसके हाथ आता है। कोर्ट की कार्यवाही में चन्दू अनुराधा का पत्र पेश करता है जिसमें बीती सभी बाते लिखा दी थी। उसके अधार पर अरविंद के चारों ओर आरोप के शिकंजे और भी दृढ़ हो जाते है। चन्दू धर्मराज की तरह क्या अरविंद ने प्रेसिडेण्ट को ढकेला था ? " ५३ इस प्रश्न पर चन्दू "हो सकता है। " ५४ इतनाही उत्तर देता है। चन्दू झूठ बोलता है किन्तु उसका प्रेरणाश्रोत अरविंद ही है।

नाटककार शंकर शेष ने चन्दू को एक स्थान पर एकलव्य दूसरे स्थानपर धर्मराज बताया है। समाज की शिक्षा समस्यापर प्रकाश डालने का बेजोड़ कार्य डॉ. शेषजी ने

किया है। अतः नाटककारने चन्दू युवकों का प्रतिनिधी बन कर अन्याय के विरुध्द बली चढानेवाला आदर्श प्रस्तुत करता हैं।

८) यदू :

यदू अरविंद का मित्र तथा सहकारी प्राध्यापक है। वह अरविंद को सलाह देता है कि न्याय पक्ष लेने से पुराने साथी विमलेन्दु की हत्या हो चुकी थी। अतः अरविंद प्रिन्सिपल बनकर उसके लिए वाईस प्रिन्सिपली का रास्ता बनायें। इसलिए नकल के रिपोर्ट वापस लेने के लिए कहता है। अरविंद किसी को मानता नही, यदू उसपर व्यंग्य करता है - " इस की आदर्शवादी बेवकूफियों की पूजा करती रहीं। मै ? । "५५ तो और कागज लाकर दे देता। कहता - "करो बेटा नकल, इत्मिनान से करो। अपने बाप का क्या जाता हैं। " ५६ हमारे समाज में आज ऐसी ही लोगों की भरमार रही। यदू का यही रुख भ्रष्टाचार को बढावा दे रहा है। छात्रों की बुरी प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढती जा रही है - मेहनत करने की प्रवृत्ति कम हो गयी है।

यदू और लीला के हठ के कारण अरविंद प्रिन्सिपल बन जाता है। अनुराधा पर बलात्कार के बात सुनता है। यदू कहता है - " फिर भी ..... तुम्हारा इसमें क्या दोष है ? जिसने किया है, भुगतेगा। " ५७ इस बात में यदू अरविंद को जिम्मेदार नहीं मानता। अनुराधा को समझाओ और इस केस को दबाओ ऐसी सलाह देता है।

यदू और लीला को विमलेन्दु आदि के एक प्रवृत्ति है। यदू अपने स्वार्थ के लिए अरविंद को गलत सलाह देता है। आगे के परिणामों के बारे में सोचता भी नही "खुद दावा मात्र करता है" यदू 'मित्र' शब्द के सही अर्थ का प्रतिनिधी मान जा सकता।

९) सरकारी वकील : (पहली आवाज)

सरकारी वकील का आरोपी का सवाल पूछना यथार्थ लगता है। अरविंद के कोर्ट केस के मामले मे जज की भूमिका करनावाली चरित्र-चित्रण की दृष्टि से महत्व नही। एक-दो बार नकार देती आगे वह सुचारु ढंग से कोर्ट चलते है।

सरकारी वकील का व्यक्तित्व को थोडासा ठूंस आधार मिल गया है। चन्दू से सवाल पूछते समय किसी सफल वकील की तरह अपनी सूझ-बूझ, धुर्तता और चतुराई का परिचय देते है। इनके प्रश्नों के कारण ही चन्दू के द्वारा वे बातों भी सामने आती है। जिनसे अरविंद के गुन्हागार होने की संभावनाही बढती है। अतः सरकारी वकील का चरित्र-चित्रण पूर्ण किया जा सकता है।

तीसरी आवाज अरविंद की वकील की है। सरकारी वकील के प्रतिस्पर्धी के रूप में उपस्थित है। एक - दो स्थानों पर आब्जक्शन भी उठाते हैं, परन्तु जज साहब उन्हें नकार देते है। इनके व्यक्तिमत्व मे निखार दृष्टि से कोई घटना महत्वपूर्ण नहीं है। एक दो बार नकार देती आगे वह सुचारु ढंग से कोर्ट चलते है।

१0) अप्रत्यक्ष पात्र :

अप्रत्यक्ष पात्रों में राजकुमार, प्रो. मिश्रा,सिन्हा, मिसेज शुक्ला आदि पात्र- आते है। इन पात्रों का भी आवश्यक स्थान पर प्रयोग किया गया है। ये पात्र नाटक में वस्तु विकास तथा चरित्र चित्रण में सहायता करता है।

राजकुमार प्रसिडेण्ट का बेटा है। कॉलेज को अपनी बाप की जायदाद समझकर बहुत कुछ हरकतें करता है। परीक्षा में नकल करता है। अनुराधा जैसी गरीब विद्यार्थीनीपर बलात्कार की कोशिश करता है। राजकुमार और उसके साथी कॉलेज में गुंडागिरी का वातावरण निर्माण करते है। प्रोफेसरों पर भी वह रोब जमाता है। प्रेसिडेण्ट का भी अपना लडका गुण्ड, आवारा, बदमाश है, यह मालूम है। फिर भी अपने बेटे को बचाने की कोशिश करता रहता है। एक दृष्टि से उसका बाप ही उसकी

बुरी प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है।

प्रो. मिश्रा : चन्दू की नकल पकडनेवोले प्राध्यापक है। प्रेसिडेण्ट का बेटा राजकुमार छुरा सामने रखकर नकल करता है। प्रो. मिश्रा उस कमरे में पर्यवेक्षक थे। वह देखकर भी अनदेखा कर रहे थे। राजकुमार की सीट से दूर घूम रहे थे। एक हवा के झोंके से नकल का परचा चन्दू के पास आता है चन्दू उठाकर प्रोफेसर के हाथ देते समय उसे पकडता है और बेचारे चन्दू पर नकल का आरोप लगाता है। चन्दू के नाम पर नकल की रिपोर्ट युनिर्सिटी को भेज दी जाती है। प्रेसिडेण्ट की खुशामद करने के लिए न्याय का पक्ष होकर भी प्रोफेसर मिश्रा चन्दू जैसे सामान्य विद्यार्थी की जिंदगी बरबाद करते हैं।

उपर्युक्त दो पात्रों के माध्यम से नाटककार डॉ. शेष ने आज के छात्रो की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। शिक्षा क्षेत्र मे चलनेवेला भ्रष्टातचार, अन्याय आदि पर प्रो. मिश्रा के माध्यम से उनाकर किया है।

सिन्हा : यह प्रमोशन के लिए अपने अफसर बेटे के गुण बढाने की कोशिश करनेवाला व्यक्ति है। मिसेज शुक्ला : लीला की सहेली पुलिस अफसर की पत्नी है। जो लीला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के लिए चित्रित की गयी है।

२) महाभारत कालीन कथा के पात्र : प्रत्यक्ष पात्र

महाभारत की कथा में आचार्य द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपी,एकलव्य, युधिष्ठिर, भीष्म, अर्जुन, आहत सैनिक आदि पात्रों का समावेश देखेंगे।

१) द्रोणाचार्य :

डॉ. शंकर शेष ने अरविंद के समकक्ष और शिक्षा क्षेत्र के पहले बिके पुरुष के रुप में द्रोणाचार्य को चुना है। अत: नाटक में उनका चित्रण निम्नांकित रुप में हुआ है।

डॉ. शेष ने महभारत कथा का द्रोणाचार्य नायक है। द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी आम आदमी की तरह सुविधा और सुरक्षा की प्रेमी है। द्रोणाचार्य की पारिवारिक स्थिति अत्यंत सोचनीय और दरिद्री अश्वत्थामा दूध की मांग करता है। कृपी दूध के नाम उसे आटे का घोल पिलाती है। द्रोणाचार्य कहते हैं - "उस छोटे से बच्चे के साथ कपट करते हुए शर्म नहीं आयी तुम्हे ? " ५८ कृपी कहती है, हमारी बातों पर कभी अपने विश्वास नहीं किया - "कभी अपने लडके की हड्डियों गिनी तुमने ? भीखमंगे का लडका कहलाता है तुम्हारा बेटा। "५९ मुझसे पूछो, कैसे जुटाती हूँ दो जून की रोटी। "द्रोणाचार्य चुप बैठकर सुनते रहते हैं। वह आगे कहती है कि होंगे बडे आचार्य ! लेकिन उससे अन्न नहीं आ जाता, कपडे नहीं आ जाते। "६0

द्रुपद अपने सहपाठी द्रोणाचार्य का अपमान करता है। उन्हे ढोंगी, अकडू और दरिद्री भिखमंगा कहता है। अत: वे अपमान के कारण क्रुध्द है। वे कहते है " मै जब ऐसी पीढी तैयार करुंगा जो केवल युध्द की भाषा बोलेगी। " ६१ द्रोणाचार्य अपना स्वतंत्र आश्रम प्रस्थापित करना चाहते थे, लेकिन इसी समय कौरव-पांडवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य को राकुमारों के आचार्य नियुक्त करने के विचार से उन्हे निमंत्रत करते है। द्रोणाचेर्य आचार्य पद के योग्य है। भीष्म के रुप में एक मौका सामने देखकर दरिद्रय से ऊबी कृपी यह निमंत्रण स्वीकारती है। द्रोणाचार्य कुछ कहना चाहते पर भी कह नहीं पाते। सुविधा और सुरक्षा के प्रति आकर्षित कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश किया जाता है।

समय बीत चुका है। कौरव-पांडव विद्या ग्रहण कर रहा है। जंगल मे आखेट के लिए द्रोण तथा उनके शिष्य पहुंचे है। पर कहीं से इस कुशलता से बाण आते है कि हिरणों के पीछे लगे कुत्तो का भौंकना भी बंद हा जाता है। खोजते हुए सब एकलव्य के पास पहुंचते है। एकलव्य द्रोणाचार्य को गुरु मानता रहा है, किन्तु उन्होंने

JI UNIVERSITY

उसे शिष्य के रुप में स्वीकार करने से नकारा था। बाद में एकलव्य द्रोण की मूर्ती बनाकर अपनी साधना से आश्चर्य कारक कौशल प्राप्त करता है। एकलव्य द्रोणाचार्य को गुरुदक्षिणा देना चाहता है। द्रोणाचार्य कहते है - " लेकिन किस आधार से ? मैंने तुम्हे दिया क्या है ? " ६१ किन्तु एकलव्यने उनकी प्रेरणा से ही विद्या प्राप्त की थी। अत: उन्हे गुरुदक्षिणा का अधिकारी मानता है और गुरुदक्षिणा दे कर उऋण होना चाहता है। कहता है - "पांडू या कौरवों का बेटा भले न होऊं, व्याधराज का पुत्र तो हूं ही । कहेंगे तो उनका पूरा राज्य आपके चरणों मे रख दूंगा। " ६३

आचार्य द्रोण को सुविधाने अपाहिज बना दिया था। इसी कारण वे व्यवस्था के कठपुतली बनकर, गुरुदक्षिणा के रुप में एकलव्य से अंगूठे का दान बिना हिचकिचाते हुए मांगते है। एक महान प्रतिभा को उभरने से पहले कुचल देने का काम द्रोणाचार्य करते है। अर्जुन कहता है - "इतिहास तो कल भी हंसेगा आप पर। जब भी प्रतिभा को जाति और व्यवस्था के नाम पर कुचला जायेगा तो लोग आपको ही याद करेंगे। इतिहास आपको क्षमा नही करेगा।" ६४ द्रोण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं - " याद है, मैंने एक दिन बहुत प्रसन्न होकर तुम्हे आशीर्वाद दिया था कि, तुमसे बड़ा धनुर्धर नहीं होगा। आज मै अपना वचन पूरा कर रहा हूँ। " ६५

जैसे अर्जुन ने उनके आचार्यत्व पर प्रश्नचिन्ह लगाया है जब कौरवों द्वारा निर्दयता तथा निर्लजता है, रजस्वला एक वस्त्रा द्रौपदी को दरबार में नंगा किया जा रहा था .... आकाश के टुकडे-टुकडे कर देनेवाली मर्मभेदी आवाज से वह पुरुष को जो पुकार रही थी, जब द्रौपदी की पुकार किसी ने नहीं सुनी, तब वह आचार्य द्रोण के सामने आकर खड़ी हो गयी थी। उसने कहा था - "आचार्य, आप तो न पांडवों के रक्त संबंधी हैं न कौरवों के। आप आचार्य है दोनों के। क्या दुर्योधन आपका कहना नही मानेगा ? आपको तो सत्ता का मोह नही है। क्या आप अपने शिष्यों की पत्नी को सार्वजनिक रुप से अपमानित होते देख सकते है ? उठाइये अपना धनुष। " ६६ इसलिए द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी द्रोणाचार्य से कहती है - "आपना नपुंसक आचरण ढकने के लिए मुझ पर आरोप लगाते हुए तुम्हे थोडी भी लज्जा नही आती ? मैं पूछती हूँ, तुम्हारा आचार्यत्व कहीं मर गया था ? क्या वह केवल एकलव्य का अंगूठा कटवाने या सूतपुत्र कहकर कर्ण की अवहेलना करने तक सीमित था ? ..... तुमने चूप रहकर शिक्षक को अन्याय पीने की परंपरा दे दी । आनेवाला इतिहास तुम्हें कोसेगा। "६७ कौरवों की निर्दयता तथा निर्लज्जता का विरोध गुरु द्रोणाचार्य से अपेक्षित था, परन्तु व्यवस्था के कठपुतली बने द्रोणाचार्य विरोध किस कारण करें ? द्रोण ऐतिहासिक पुरुष नहीं, इतिहास मे जीवन कलंक है।

द्रोणाचार्य को अपनी गलती का पश्चाताप होता है। वे अपने बेटे के सवाल के जवाब नहीं दे सकते। बीस साल पहले सुविधाओं के हाथ अपने आप बेच दिया था। स्वाभिमान अस्मिता की तुलना मे दारिद्रय बड़ा बन गया था और सुख-सुविधा तथा राजकीय सन्मान ने मोहित किया था। राजकीय अन्न की दासताने विवेक को उसी समय खरीदा था। अब इसमे परिवर्तन असंभव है और इसका परिणाम युध्द तथा सर्वनाश के सिवा दूसरा हो नहीं सकता है।

द्रोणाचार्य इन सब बातों का जिम्मेवार कृपी को समझते हैं - " तुमने मुझे एक क्षण चैन से नही रहने दिया। दिन-रात तुम्हें मेरे दारिद्रय से शिकायत थी। मेरा धनुर्विद्या पर अभिमान का एक शब्द नही कहा तुमने। " ६८ द्रुपद से बदला लेने के लिए मैंने अपने विद्यार्थीयों को युध्द का उन्माद दिया। उनका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया कृपी ! मैं हर दिन छोटा आदमी होता गया। "मैंने केवल शस्त्र चलाने की शिक्षा दी। मैंने उन्हे इन्सान नहीं बनाया। " ६९ अत: अपने दारिद्रय से बदला लेने का हिंसक भावना द्रोणाचार्य को ग्रसती रहती है। युध्द में पांडवों का पक्ष न्याय का होते हुए भी वे उसके विरोध में लडते है। इसलिए मानते हैं - अपने ही शिष्यों के विरुध्द राजकीय अन्न की दासता ने - समझौते का चरित्र। अन्त मे धृष्टद्युम्न के द्वारा अपमान का बदला लिया जाता है।
द्रोणाचार्य की मृत्यु होती है।

हमारी भारतीय प्राचीन परंपरा में गुरु स्वयंप्रज्ञ होते थे। किसी भी प्रसंग में अपनी बुध्दि से काम लिया करते थे। परन्तु गुरु द्रोणाचार्य ने अपना स्वत्व खोने के कारण, व्यवस्था के हाथों बिक जाने के कारण इस प्राचिन परंपरा, को तोड़ डाला। डॉ. शंकर शेष द्रोणाचार्य के चरित्र से प्रभावित होकर उन्होंने महाभारत की प्राचीन कथा को अरविंद के अधुनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है की सुविधा मनुष्य को किस प्रकार अपाहिज बना देती है। चाहे वह महाभारत का गुरु द्रोणाचार्य हो अथवा आधुनिक जीवन का अरविंद। वर्तमान जीवन में होनेवाली अध्यापक की स्थिती पर लेखन मे द्रोणाचार्य के माध्यम से प्रकाश डाला है। ऐसी स्थिती मे अध्यापक नपुंसक, षंढ जीव बनकर ही उपस्थित होता है। शिक्षक के पंगु आचरण और पतन से शेष बेहद अस्वस्थ लगते है।

डॉ. शंकर शेष द्वारा द्रोणाचार्यजी को उपर्युक्त ढंग से चित्रित किया गया है। परन्तु मूल महाभारत के द्रोणाचार्य के व्यक्तित्व में उनके बिक जाने की बात नही पायी जाती। द्रोणाचार्य को यदि अरविंद के समानांतर रखना होगा, तो पितामह भीष्म को प्रेसिडेण्ट के सम कक्ष रखना पडेगा। प्रेसिडेण्ट ने अपने स्वार्थों के लिए जिस तरह अरविंद का उपयोग किया उस तरह की कोई बात भीष्म और द्रोणाचार्य के बीच नही पायी जाती। प्रेसिडेण्ट ने अरविंद को प्राचार्य पद पर बिठाकर अपने गुण्डे पुत्र राजकुमार को नकल के आरोप से मुक्त करवाया था और इसी के मूल्य रूप में अरविंद को प्रिन्सिपल बनाया था। लेकिन महाभारत मे द्रोणाचार्य की धनुर्विद्या में कुशलता देखकर बडे गौरव के साथ उन्हें कौरव - पांडव - राजकुमारों का आचार्यत्व प्रधान किया था। अरविंद प्रेसिडेण्ट से उसके हाथकण्डो से उबकर उससे नफरत करता है। उसके मन में प्रेसिडेण्ट की हत्या का विचार भी उभर चुका है। ऐसी कोई बात द्रोणाचार्य और भीष्म में नही है। अतः इस प्रकार की तुलना के कारण मूलतः द्रोणाचार्य के व्यक्तित्व का नाटक में अवमूल्यन लगता है। कारण मूल महाभारत में द्रोणाचार्य धन प्राप्ति के लिए दूसरों की सेवा जो वे पाप कर्म मानते थे, करना नहीं चाहते थे -

"अपि चाहे पुरा विप्रैर्वर्जितो गर्हितो वसे ।
परोपसेवां पापिष्ठां न च कर्यां धनेप्सया। " ७०
(महाआदि पर्व आध्या - १३० श्लोक नं. ५११)

इससे स्पष्ट है कि, बडे आदर और सन्मान के साथ द्रोणाचार्यजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था। अतः उनके बीक जाने का सवाल ही नही उठता।

अर्थात इस कारण महाभारत के द्रोणाचार्य और डॉ. शेष क द्रोणाचार्य के व्यक्तिमत्व में अंतर आ गया है। लेकिन इसका कारण एकलव्य और द्रोणाचार्य की कथा के संबंध में थोडीसी भ्रामक प्रस्थापित कल्पनाए मानी जा सकती है। एकलव्य का अधूरा चित्रण ही प्राय प्रचलित रहा है। आगे चलकर श्रीकृष्ण द्वारा अनेक आततायियों की साथ एकलव्य का वध भी किया गया था। इस बात की अनदेखा किया है। अस्तु

उपयुक्त कारणों से अरविंद का तरह द्रोणाचार्यजी को शिक्षा कार्य में भ्रष्टाचारी करनेवाला भ्रष्ट व्यक्तिमत्व मानना औचित्य पूर्ण नही मानता।

२) कृपी :

कृपी द्रोणाचार्य की पत्नी है। उनकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नही है, अतः द्रोणाचार्य को हर बात में कोसती है। कृपी को सभी लोगों की तरह सुविधा और सुरक्षा के प्रति आकर्षण है। घर के दरिद्रता से परेशान कृपी अपने पती द्रोणाचार्य को अपनी इच्छापूर्ति के हेतू राजपुत्रो का आचार्य पद ग्रहन करने के लिए मजबूर करती है। कहती है - " अनाज और कपडे के समस्या हमेशा के लिए मिट जायेगी। कुछ सम्मान से रह सकेंगे तुम द्रुपद से बदला ले सकेंगे। " ७१ इस कथन से कृपी ही खलनायिका लगती है। दरिद्रता और कृपी के हठ के कारण द्रोणाचार्य आचार्य पद ग्रहण करते है।

समय बहुत बीत चुका है। कृपी पहले जैसे नही रही, अब उसके स्वभाव में परिवर्तन आया है। अश्वत्थामा अपनी मां से कुछ सवाल करता है तब कृपी कहती है - " अपने पिताजी से पूछ । " ७२ सभी घटनाओं की जिम्मेवार कृपी ही है, लेकिन वह मान्य नहीं करती। उसे अपनी गलती भी बाद मे महसूस होती है। मजबूर होकर भाई बेटे के एक भी सवाल का उत्तर नही दे सकती। सभी कुछ जानकर भी मालूम न होने का भाव दिखती है।

द्रोणाचार्य भी इन बातों का जिम्मेवार कृपी को ही मानते हैं। इसलिए कृपी कहती है - "अपना नपुसक आचरण ढंकने के लिए मुझपर आरोप लगाते हुए तुम्हें थोडी भी लज्जा नही आती ? मैं पूछती हूँ तुम्हारा आचार्यत्व कहाँ मर गया था ? क्या वह केवल एकलव्य का अंगूठा कटवाने या सुतपुत्र कहकर कर्ण को अवहेलना करने तक सीमित था ? तुमने अपने शिष्यों को रोका क्यों नही ? " ७३ कृपी आवेश मे आकर द्रोणाचार्य पर आरोप लगाती है। कृपी परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है, उसे लगता है - " ..... साफ क्यों नही कहते की तुम्हें अपने शत्रु द्रुपद की कन्या को अपमानीत होते देखकर एक हिंसक आनंद मिल रहा था । " ७४ कृपी द्रोणाचार्य को अत्यंत नीचता के स्थान पर दिखती है किन्तु द्रोणाचार्य के पतन के लिए करणीभूत कृपी ही है। अपनी ही गलतीयों को ढंकने के लिए द्रोणाचार्य पर आरोप लगाती है। "वे तो शिक्षक नही है। आचार्य नहीं है। तुमने चुप रहकर शिक्षक को अन्याय पीने का परंपरा दे दी। आनेवाला इतिहास तुम्हे कोसेगा। " ७५

कृपी द्रोणाचार्य को द्रुपद के सामने भीख मांगने भेजती है। द्रोणाचार्य को एक क्षण भी चैन से रहने नहीं देती। दिन-रात उनके दारिद्रयपर शिकायत करती है। बात - बात में अपमान करती है। द्रोण की धनुर्विद्या पर कभी अभिमान का एक शब्द नही कहती। सिर्फ दारिद्रय की ओर उंगली उठाते हुए उनपर अपना अधिकार जमाती है। मां होकर अश्वत्थामा के पतन कारण बनती है। अन्याय के साथ झगडने की शिक्षा नही देती। उसे समझौते की सन्तान बनाती है उसे गोरस के बदले आटे के घोल पिलाती है। द्रोणाचार्य को ऋषी परंपरा से गिराकर राजपुत्रों की दासता में धकेलती है। इतना सब होने पर वह उल्टे-सीधे सवाल आचार्य द्रोण का करती है। कृपी को अपने पहले स्थिति के पहचान नही रहती। क्योंकि सुविधाओने उसकी संवेदनाओको इतना मार डाला है। अपने पति अकडू, वाचाळ, नपुसक, ढोंगी आचार्य आदि कहने को जरा भी शर्म नही आती। आगे वह कहती है - "द्रोपदी का खुला शरीर देखने की लालसा तुझे भी सता रही थी ? " ७६ कृपी की द्रोण की ओर दृष्टि इतनी संकुचित बन गयी है। वह अपनी पती की चुप्पी पर कोसती है । नारी के मान - मर्यादा को जानती है। उसमे नारी के सभी गुण दिखाई देते है।

कृपी परिस्थिति के अनुसार अपने में परिवर्तन करती है। अपने दोषो की ओर कभी नही दिखती। कृपी के चरित्र में शेष जी का आक्रोश झलकता है। कृपी के माध्यम से नारी के सभी गुणों पर प्रकाश डाला है। कृपी मे इन दोषों के साथ कई उदात्त गुण भी है। नारी रक्षा के लिए वह झगडती है। उसमे नारी का जागृत रुप दिखाई देता है। इन्हीं गुण - दोषों के साथ कृपी का चरित्र नाटककार ने हमारे सामने प्रगट किया है।

३) अश्वत्थामा :

द्रोणाचार्य का इकलौता पुत्र अश्वत्थामा है। अश्वत्थामा स्वभावसे हठी है। वह गोरस के हठ करता है। कृपी उसे आटे का घोल पिलाती है। उसमे दूध का स्वाद न होने पर भी गोरस समझकर ही पीता है। न जाने उसे कितनी खुशी होती है। कहता है - " उस क्षत्रिय कुमार के पास उसे जाकर बताता हूँ कि, हमारे यहां भी गोरस है। घमंडी कहीं का ! " ७७ अश्वत्थामा छोटा होते हुए भी उसमे आत्म सन्माम की ज्योती प्रखर रुप मे दिखाई देती है।

अश्वत्थामा के लेखक ने दो रुप प्रस्तुत किये है - बचपन और प्रौढ़ा अब अश्वत्थामा बड़ा हो चुका है। वह अच्छा क्या और बुरा क्या जानता है। इसीलिए

कृपी से वह सवाल करता है - "मां तुमने मुझे समझौतों की संतान क्यों बनाया ? तुमने मुझे बचपन से विरोध करना क्यों नही शिकाया ? उस दिन तुमने आटे के घोल के बदले विष क्यों नहीं पिलाया। " [७८] अश्वत्थामा अपने दोषों को दूर करने का प्रयास नही करता, सिर्फ दोष दिखाता रहता है। ये सबसे बडी उसकी चरित्र की कमजोरी है। कृपी को ही अश्वत्थामा सभी बातों का जिम्मेवार मानता है। वह सोचता है कि, " मेरे संस्कारों में ऐसी क्या गडबडी थी, जो मेरा खून गरम नहीं हुआ ? मेरे शब्द फुंकार कर खडे नही हुए ? बताओं मां ऐसे क्यो नही हुआ ? कही गड़बड़ी है मेरे संस्कारों में ? " [७८] अश्वत्थामा को अपने आप पर लज्जा आती है। इसलिए इसके कथन मे यथार्थ आक्रोश उत्पन्न होता है। मैं ऐसा बना या मुझपर बुरे संस्कार मां, तुमने किया या पिताजी ने ? ऐसे कटु सवाल करता है। जो उसकी व्यक्तिमत्व में निखार और पैदा कर देता है।

अश्वत्थामा स्वाभिमानी है। एक आचार्य के बेटा होने के नाते अपमान की जिदगी उसे पसंत नहीं है। इसलिए अपने पिताजी से प्रश्न पुछतां है - " वनवास जानेसे पहले पांडव मिलेने क्यों नहीं आयें ? द्रोपदी वस्त्रहरण के समय आप चुप क्यो बैठे ? संसार आपको महान आचार्य मानता हैं । " [८०] वह इस प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता है। अन्याय का विरोध करना चाहता है। इसीलिए ये प्रश्न उसे नोंच-नोंच कर खा रहे है। इस समय कृपी द्रोणाचार्य की ओर संकेत करती है। आपने बेटे की प्रश्नों का उत्तर देनेसे टालते है। किन्तु इन सब घटनाओं का जिम्मेवार अश्वत्थामा कृपी को ही मानता है। अपनी मां को कोसता है।

नाटककार शंकर शेष ने अश्वत्थामा के प्रश्नो के माध्यम से समाज के यथार्थ चित्र की ओर संकेत किया है। 'कहा गड़बड़ी है, मेरे संस्कार में ?' इसका सही उत्तर शेष ही देते है। शिक्षा संस्कारों के बारे में विचार प्रकट करते है। अन्याय के सामने झुकने की अपेक्षा अन्याय के विरोध झगडने कि शिक्षा होनी चाहिए। ऐसा शेष का कहना है। अश्वत्थामा के चरित्र में उदात्तता और आत्म-सम्मान के गुण दिखई देते है, जिसके कारण उसका व्यक्तित्व स्पष्ठ होता है। किन्तु सिर्फ दोष दिखाने के कारण चरित्र की कमजोरी भी लगती है। इस तरह अश्वत्थामा का चरित्र एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

४) एकलव्य :

व्याधराज के पुत्र का नाम है एकलव्य। द्रोणाचार्य एकलव्य क्षुद्र होने के कारण उसे धनुर्विद्या शिक्षा देने के लिए नकार देते है। द्रोणाचार्य के अनुसार उनकी विद्या केवल ब्राम्हण और क्षत्रियों के लिए है। एकलव्य को द्रोणाचार्य के नकार के कारण प्रेरणा उत्पन्न होती है। द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर उसके चरणों में बैठकर अभ्यास करता है। एकलव्य योग्यता और प्रतिभा को ज्यादा महत्व देता है। कहता है - "लेकिन जन्म पर तो मेरा कोई अधिकार नही, था। जन्म से पहले अपने माता-पिता तय करने की सुविधा क्या प्रकृति भी देती है ? " [८१] किन्तु द्रोणाचार्य उसकी जन्म की मजबूरी मानते है। मनुष्य का जन्म हमेशा एक अनचाही व्यवस्था में होता है, तो मैं क्या करुँ। एकलव्य की कुशल धनुर्विद्यापर गुरु द्रोण भी आश्चर्य- चकीत होते हैं। लेकिन अपने आपको एकलव्य का गुरु मानने के लिए तैयार नहीं होते।

एकलव्य द्रोणाचार्य से प्रार्थना करता है - "आपके आशीर्वाद से मेरा विद्या कृतार्थ हुई। आपने इस बनवासी शिष्य से गुरुदक्षिणा मांगिए। " [८२] सिर्फ गुरु की प्रेरणा और एकाग्रता के कारण यह विद्या प्राप्त करता है। द्रोणाचार्य के गुरु मानता है, यह उसने अपनी विद्यासे किया है। भले ही वह बहुत नालायक शिष्य क्यों न हो। एकलव्य की विद्या स्वयंभू थी उस् जितने वाला संसार में कोई नहीं हो सकता, यह सिर्फ द्रोण ही जानते है।

द्रोणाचार्य को लगते हैं कि, एकलव्य मुझे चुनौती दे रहा है, इसलिए मेरी मनचाही गुरुदक्षिणा तुम नहीं दे सकोंगे। ऐसा कहते है। एकलव्य गुरुदक्षिणा के

12284
A

रुप में मुँहमांगा धन, राज्य तथा अपने प्राण भी देने के लिए तैयार है। तब द्रोणाचार्य एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांगते है। एकलव्य यह सुनकर क्षुब्ध हो जाता है। कहता है - " यह आपने क्या मांग लिया अंगूठा देने के बाद मैं क्या रह जाऊंगा। आप आशीर्वाद दे रहे या शाप ? " [८३] एकलव्य गुरुदक्षिणा देने का दृढ निश्चय करता है, लेकिन एक प्रश्न पूछता है - "क्या आप इस अर्जुन से कभी उसका दाहिना हाथ मांग सकोगे ? तो भी नही मिलेगी। तब आपने मुझसे ही अंगूठा क्यों मांगा ? क्या आप अपने शिष्य की हत्या नही कर रहे है ? " [८४]

एकलव्य एक हाथ में कटे हुए अंगूठे को लिए आतो है। द्रोणाचार्य को खून का टीका लगाता है। खून से सजा पंजा है और गुरुदक्षिणा समर्पित करते हुए कहता है, "यह रही आपकी गुरुदक्षिणा, गुरुदेव ! यह रही आपकी गुरुदक्षिणा ! " [८५] शिक्षक की बध्दि और व्यवस्था की गुलाम बन गई। इसलिए एकनिष्ठ एकलव्य का गुरु द्रोणाचार्य को शिष्यत्व का अधिकार नहीं रहा। यह नाटककार शेष ने प्रकट किया है।

एकलव्य का उपर्युक्त चित्रण महाभारतीय चित्रण से थोड़ा भिन्न है। अनेक देशों के राजकुमारों तथा कर्ण को, इतना ही नही अपने वध के लिए उत्पन्न किये गये धृष्टद्युम्न को भी विद्या सिखानेवाले द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य मात्र निषाद, भील या वनवासी होने के कारण नकारा नहीं गया है। एकलव्य के पिता हस्तिनापुर के विरोधी रहे थे तथा एकलव्य भी जरासंध, शिशुपाल जैसे आततायियोंका मित्र रहा है। अतः हस्तिनापुरके राजकुमारों का आचार्य हस्तिनापुर विरोधी राज्य के राजकुमार को शिक्षा नही दे सकता था। यही नकारे जाने का महाभारतीय कारण था।

अतः महाभारतकालीन एकलव्य और डॉ. शंकर शेष द्वारा चित्रित एकलव्य में अन्तर आ गया है। दूसरे स्थान पर एकलव्य द्वारा भीम अर्जुन की भुजाएं गुरुदक्षिणा के रुप मे मांगने पर भी नही मिलेगी, यह कहकर अपना अंगुठा कटवाना उसकी अहं मान्यता को उभारता है। वस्तुतः महाभारत मे एकलव्य बिना गुरु के मार्गदर्शन के सिर्फ अपनी विद्‌यार्जन की तीव्र इच्छा, कृत संकल्प स्वभाव तथा कठोर परिश्रम से यश पानेवाले उत्कृष्ट विद्यार्थी की रुप में चित्रित हुआ है। यही दोनों चित्रणों में अन्तर आ गया है।

५) अर्जुन :

पांच पांडव मे तीसरा पांडव, पांडु राजा का पुत्र अर्जुन है। कौरव - पांडव के आचार्य द्रोणाचार्य के पास धनुर्विद्या ग्रहण कर रहे हैं। जंगल मे आखेट के लिए द्रोण तथा अनेक शिष्य पहुंचे है। वहां व्याधराज का पुत्र एकलव्य द्रोणाचार्य गुरु मानकर धनुर्विद्या की कला प्राप्त करता है। धनुर्विद्या के लिए एकाग्रता बहुत आवश्यक होती है। द्रोण कहते है - बिना गुरु के ज्ञान किन्तु अर्जुन कहता है, यह संभव हो सकता है। उसी समय द्रोणाचार्य एकलव्य को अंगूठे का दान मांगते है। अर्जुन कहता है - "पर यह अन्याय है, गुरुदेव ! देखा नहीं, उसकी आँखो में क्षत्रियों के लिए कितनी घृणा थी। आपने एक महान प्रतिभा को उभरने से पहले ही कुचला दिया। " [८६] एकलव्य के शिक्षा भी नहीं दी, क्या आपको गुरुदक्षिणा देना अपराध हो गया। अर्जुन द्रोणाचार्य की ओर आश्चर्यसे देखता रहता है। अर्जुन के मन में कर्ण के समान अकारण असूया नहीं है। अर्जुन के चरित्र की यही उदात्ता है।

द्रोणाचार्य एकलव्य की महान धनुर्धर बनने की इच्छा के अपने लिए चुनौती समझते हैं। उन्हें लगता हैं, कल इतिहास मेरी अपूर्णता पर हंसता रहेगा। इसलिए अर्जुन कहता है - "इतिहास तो कल भी हंसेगा आप पर। जब भई प्रतिभा को जाति और व्यवस्था के नाम पर कुचल जायेगा तो लोग आपको याद करेंगे। इतिहास आपको कभी नही क्षमा करेगा। " [८७] अंगूठे का दान मांगकर एकलव्य की पूरी कला छीन ली है। व्यवस्थाआ सिर्फ निमत्त बन गयी है।

अर्जुन द्रोणाचार्य का प्रिय शिष्य है। अतः उसेही इस संसार में बडा धनुर्धर करना चाहते है। एकलव्य की कला स्वंयभू है, इसलिए अर्जुन पूरी तरह उसके

कसौटी को उतर नहीं सकता था, यह सिर्फ द्रोण जानते है। उसका आगे का रास्ता निष्कटंक बना देते है। फिर भी अर्जुन के अन्याय लगता है। क्योंकि उसने अपनी आंखो से बडे धनुर्धर देखा है। भविष्य में जब कभी उसे संसार का सबसे बडा धनुर्धर कहेगा तो उस समय एकलव्य का गरम खून से सना हुआ पंजा ही सामने आयेगा। उसका मजाक उड़ायेगा। कहता है - " गुरुदेव मैं अपनी अपराध भावना को कभी नहीं जीत सकूंगा। "[८८] अर्जुन अन्याय को, पाप समझता है, वह पाप में शामिल नहीं होना चाहता है।

डॉ. शेष ने अर्जुन के व्यक्तित्व में उदात्तता भर दी है। जब उसे दुनिया का श्रेठ धनुर्धर बनाने के लिए ही द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा कटवां लिया गया, यह कहा जाता है। तब वह ग्लानी से भर उठता है। अर्जुन विद्या का अर्जन करनेवाला सच्चा विद्यार्थी है। वह कहता है - " उसे जितने के लिए और अधिक विद्या सीखना इस तरह श्रेष्ठ बनने के लिए वह स्वंय कठोर परिश्रम करने के लिए तैयार है, न कि द्रोणाचार्य की तरह प्रतिस्पर्धी को नष्ट कर वह बिना स्पर्धा के जिता जाये। ऐसे कृत्यों के प्रति अर्जुन की घृणा तथा विद्यार्जन की लगन उसके व्यक्तित्व में उदात्तता भर देते है। सच्चे विद्यार्थी के रुप में अर्जुन का चित्रण या सफलता से हुआ है।

६) भीष्म :

अपने पुत्रों की भलाई के लिए उनकी शस्त्रास्त्र विद्या की सही शिक्षा के लिए अत्यंत योग्य आचार्य की योजना करनेवाले पितामह भीष्म सजग, सुबुध्द पालक के रुप में यहां चित्रित हुऐ है। इस घटना के अलावा उनके व्यक्तित्व के विकास का कोई संकेत डॉ. शेष ने नहीं दिया है।

७) युधिष्ठिर :

युधिष्ठिर के चरित्र-चित्रण के लिए भी नाटक में अधिक मौका नहीं है। अश्वत्थामा की मौत की अफवाह के समय द्रोणाचार्य युधिष्ठिर से सचाई पुछते है, परंतु उनके कहे वाक्य का आधा हिस्सा द्रोणाचार्य सुन पाते हैं और आगे का हिस्सा न सुनकर व्यथित होकर ध्यानस्थ बैठते है। यहां युधिष्ठिर द्वारा जो सुना वही कहा गया हैं। परन्तु चन्दू को युधिष्ठिर के समक्ष दर्शाने के लिए ही इस अंश का उपयोग किया गया है। अतः युधिष्ठिर के व्यक्तित्व विकास के लिए भी गुंजाइश नहीं रही है।

अन्य पात्रों में एक - दो, सैनिकों का उल्लेख आया है। दौडते-दौडते द्रोणाचार्य साथ आते हैं। एक - दो वाक्य कहते, उनके व्यक्तित्व चित्रण का सवाल ही नहीं उठता।

३) चरित्र चित्रण मे समानान्तरता :

'एक और द्रोणाचार्य' महाभारत के एक पूरे समदर्भ को आधुनिक जीवन से जोड़ने की कोशिश है। प्रस्तुत नाटक में दो कथाएं है। इसलिए नाटक में दो दृश्य खड़े हो जाते है - एक द्रोणाचार्य के जीवन का दृश्य और दूसरा अरविंद के जीवन का। एक पौराणिक दृश्य और दूसरा आधुनिक दृश्य ! डॉ. सुनिल कुमार लवटेजी "इन दोनो कथाओं मे बिंब-प्रतिबिंब में समानता मानते है अतः वो दो कथाए परस्पर पूरक है। "[१०] एक ही गती से नाटक के आरंभ से लेकर अन्त तक चलती रहती है। दोनों कथाओं से आर्थिक संकट, व्यवस्था का दबाव, सुविधाभोगी प्रवृत्ति और मध्य वर्गीय समझौता परस्ती उससे उभारते जीवन सत्य जैसे प्रश्नों का समानान्तर मिली है। अरविंद और द्रोणाचार्य, लीला और कृपी, चन्दू और एकवल्य, अनुराधा और द्रौपदी इन पात्रों पूरा तरह से समानान्तरता मिलती है। द्रोणाचार्य और अरविंद की कथा में अनेक विद्वानों ने समानान्तरता उठायी उनका कथन दृष्टव्य है।

AJI UNIVERSITY
HAPUR

१) अरविंद और दोणाचार्य :

आधुनिक कथा का नायक अरविंद है, तो महाभारतीय कथा का नायक द्रोणाचार्य है। अरविंद भी अपनी आचार संहिता को भुलाने के लिए विवश हो जाता है क्योंकि विधवा बहन और बीमार माता, पत्नी और पुत्र का जीवन उसके उपर आश्रित है। तो सुविधा और सुरक्षा के प्रति आकर्षण, कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है। प्रेसिडेण्ट की कृपा भोगने के कारण अरविंद अनुराधा के चीरहरण का न्यायपूर्ण प्रतिकार नहीं कर सके तो, कौरवों का अन्न खानेके कारण द्रोणाचार्य द्रौपदी चिरहरण निष्क्रीय रुपसे देखते रहते है अरविंद के ह्रदय में आदर्श और यथार्थ का संघर्ष है, तो उधार युध्दभुमि में - अश्वत्थामा के मारे जाने की खबर से द्रोणाचार्य भी चिंतित है। द्रोणाचार्य और अरविंद में प्रवृत्ति एवं घटनाओं का साम्य दिखाकर अरविंद के प्रति द्रोणाचार्य सिध्द करने का प्रयास किया गया है।

२) लीला और कृपी :

सुविधाभोगी लीला के हठ के कारण प्रो. अरविंद प्रिन्सिपल बन जाता है, तो सुविधा और सुरक्षा के प्रेमी कृपी के कारण द्रोणाचार्य आचार्य पद ग्रहण करते है।

३) अनुराधा और द्रौपदी :

प्रेसिडेण्ट का लडका राजकुमार अनुराधा पर बलात्कार की कोशिश करता है, किन्तु उसके लिए अरविंद कुछ नहीं कर सकता है, तो महाभारत मे द्रौपदी वस्त्रहरण के समय द्रोणाचार्य आदि विद्वान निष्क्रीय रुपसे देखते रहते है। द्रोणाचार्य के चुप्पी कारण जो प्रसंग नाटककारने दर्शाया है उसके अनुसार समानान्तरता आती है।

डॉ. सुरेश गौतम और वीणा गौतम उनके अनुसार - अरविंद और द्रोणाचार्य, लीला और कृपी, चन्दू और एकलव्य, बिमलेन्दु और अर्जुन, अनुराधा और द्रौपदी, चन्दू और युधिष्ठिर आदि में सामानान्तरता मानते हैं। " ११

निष्कर्ष :

समग्रतः यह नाटक पात्रों के चरित्र-चित्रण के निकष पर भी खरा और पूरा उतराता है ऐसा कहना उचित रहेगा। सशक्त चरित्र - चित्रण अरविंद, द्रोणाचार्य, यदू, चन्दू, बिमलेन्दु और लीला का ही हुआ है। अन्य पात्रों मे चरित्र निरुपन कही जगह शिथिल-सा है। फिर भी कुल मिलाकर नाटककार के पात्र-चित्रण संबंधी कौशल से प्रभावित होना पड़ा है, ऐसा कहा जा सकता है।

४) कथोपकथन :

नाटककार के उद्देश्य अथवा विचार को पात्र ही संप्रेषित करते हैं। इसलिए संवाद ही नाटक का प्राण तत्व है। कोई भी नाटक बिना संवादों के लिखा नही जाता। नाचक में विविध पात्रो के वार्तालाप से ही कथानक का विकास होता है। विविध घटनाएं एक-दूसरी से संयोजित होती है। संवादो के द्वारा पात्रो के चरित्रों का भी विकास होता है। पात्रों के संवाद आगे की कथा गतिशील बनाते हैं। नाटककार पात्रों के माध्यमसे अपनी अभिव्यक्ति को स्पष्ट करता है। इसलिए घटनाक्रम को स्वाभाविक बनाने में वह संवादों द्वारा अपना समस्त काम ले लेता हैं।

नाटक में दो प्रकार की संवाद योजना प्रस्तुत की जाती है - एक संक्षिप्त, दूसरी दीर्घ संवाद योजना। डॉ. शंकर शेष ने 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक मे अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिए कथा का विकास, पात्रो के क्रिया-कलाप के अनुकूल संवाद प्रयुक्त किया है। कुछ संवाद एक-एक शब्द के ही है। तो कुछ संवाद एक दो कथनो - उपकथनों तक चलते है। फिर भी इनमे चरित्र - चित्रण बडी कुशलता से हुआ है। इसमे लेखक की सुनियोजित कलात्मकता दिखाई पडती है। नाटक में कहीं - कहीं दीर्घ संवाद दिखाई पडते हैं। दीर्घ संवाद होते हुए भी उनमे रोचकता और सजीवता कायम बनी रही रही है। नाटककारने संक्षिप्त और दीर्घ इन दोनो मानसिक संघर्ष को उजागर किया है।

संवाद योजना में व्यंग्यों की तीव्रता अप्रतीम है। प्रस्तुत नाटक में ऐसे मार्मिक संवाद सर्वत्र दिखाई देते हैं। अरविंद जैसे एक अध्यापक अपनी सुविधा और पद के लिए अंत मे एक सच्चे विद्यार्थी चन्दू को मदद नही कर सकता और अनुराधा के चीरहरण को निष्क्रीय भाव से देखता है। महाभारत के द्रोणाचार्य जो एकलव्य की मदद नही कर सके थे और द्रौपदी का चीरहरण निष्क्रीय भाव से देखते रहें, उनसे यह अरविंद भिन्न नहीं है। अध्यापक की इस स्थिति पर व्यंग्य कसते हुए विमलेन्दु और अरविन्द का संवाद :

विमलेन्दु : तू द्रोणाचार्य है। व्यवस्था और सत्ता के कोडों से पिटा हुआ द्रोणाचार्य - इतिहास की धार मे लकडी का ठूंठ की तरह बहता हुआ वर्तमान के कगार से लगा हुआ - सड़ा - गला द्रोणाचार्य। व्यवस्था के लाईटहाउस से अपनी दिशा मांगनेवाले टूटे जहाजसा - द्रोणाचार्य।

अरविंद : मै द्रोणाचार्य नहीं, अरविंद हूँ, प्रोफेसर अरविंद !

विमलेन्दु : बकवास ! तू द्रोणाचार्य है। कौरवों की भाषा बोलनेवाला, युध्द मे भी उसका साथ देनेवाला। तू किस बात का प्रोफेसर ? तू द्रोणाचार्य है।

अरविंद : नहीं ...... नहीं ....

विमलेन्दु : हां - हां तू द्रोणाचार्य है। एक और द्रोणाचार्य ।"[१२]

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक के 'अदालत दृश्य' में संवाद छोटे-छोटे है। फिर भी उनमें कौतुहल की वृध्दि का गुण देखा जा सकता है। पाठकों - दर्शकों की जिज्ञासा बनी रहने से समूचा दृश्य जीवन्त और रोचक सरस बन गया है। जैसे -

चन्दू : आखिर विवश होकर प्रेसिडेण्ट क्लिफ से बिलकुल छोर तक आया।

पहली आवीज : आगे कोन था ?

चन्दू : प्रेसिडेण्ट ।

पहली आवाज : पीछे ?

चन्दू : प्रोफसर अरविंद ।

पहली आवाज : प्रोफेसर अरविंद का हाथ कहाँ था ?

चन्दू : प्रेसिडेण्ट की पीठ पर। वे उनकी पीठ पर हाथ रखकर मेले की ओर इशारा कर रहे थे।

पहली आवाज : इसके बाद ?

चन्दू : इसके बाद मुझे प्रेसिडेण्ट का शरीर लखड़ाता दिखा - और क्लिफ के नीचे गिरता ।

पहली आवाज : क्या प्रोफेसर अरविंद ने प्रेसिडेण्ट को धकेला ?

पहली आवाज : बोलते क्यों नही ? प्रोफेसर अरविंद ने प्रेसिडेण्ट को धकेला था।

चन्दू : हो सकता है। "[१३]

इसी प्रकार द्रोणाचार्य के इस कथन और आसपास के संवादो मे या तो मध्यम वेग है या तो फिर - गतिहीनता । - जैसे -

द्रोणाचार्य : और उस राजकीय अन्न की दासता नें मेरा विवेक खरीदा ! मेरी न्याय बुध्दि खरीदी। मुझे एकलव्य का अंगूठा कटाना पडा, मुझे कर्ण जैसे होनहार विद्यार्थी को व्यवस्था की आड़ लेकर ठुकराना पडा।

> पक्षपात क्षुद्रता ने मेरा स्वत्व छीन लिया। अश्वत्थामा, उस
> समझौते ने मुझे कभी सही आदमियों का कहाँ से निर्माण करता ? "
> [१४]

'एक और द्रोणाचार्य' के संवादों मे सरलता, स्वाभाविकता, व्यंग्यात्मकता, मार्मिकता तथा, चुस्त और संवेदनशील होने से संपूर्ण नाटक में संवादों की भाषा कहीं भी दुरुह नहीं है। अतः नाटक के पात्र अपने भावों को संवादों द्वारा सरलतासे व्यक्त करते हैं। संवाद योजना में स्वाभाविकता है। कहीं भी कृत्रिमता नजर नहीं आती।

कथोपकथन की दृष्टि से इस नाटक को वैसा देखा जाए तो शिथिल कहा जाएगा। सामान्यतः अरविंद की कथा में संवाद पात्रानुकूल है। साथ ही चरित्रों पर प्रकाश भी डालते है। कृपी के कथन में आधुनिकता का रस अधिक है। संवादो में एक आक्रोश है, आवेग है, जो वस्तु विकास मे तीव्रता और गती लाने में सहायक हुए है। इसलिए संवाद निर्माण में भी संमिश्र यश ही देखा जा सकता है।

५) देश - काल - वातावरण

देश - काल - वातावरण की ओर नाटक मे अधिक ध्यान देना पडता है। यथार्थ चित्रण के लिए देश - काल - वातावरण की आवश्यकता होती है। जिस देश की, जिस काल की और जिस वातावरण मे घटी घटना होती है, उस स्थल, काल, वातावरण का पूरा ज्ञान नाटककार को होना चाहिए। नाटक जिस ऐतिहासिक, पौराणिक या आधुनिक वातावरण की पृष्ठभूमि पर खड़ा है इस काल की रस्में, रीति-रिवाज, उस देश की तत्कालिन वेशभूषा, रहन-सहन, भाषा, आचार, परंपरा इन सबकी जानकारी नाटककार को होनी चाहिए। नाटक मे इसके वास्तव चित्रण के वजह कथा स्वाभाविक लगती है।

१) स्थान की एकता :

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में नई दृश्य योजना साफ नजर आती है। प्राचीन नाटकों की ही - तरह यहाँ भी पात्रों के प्रतीकात्मक अभिनयों द्वारा 'स्थान' (देश) विशेष का सामाजि कों (दर्शकों-पाठकों-श्रोताओं) को बोध होता है। जैसे -

टेबल, चाय के कप, ऐश ट्रे, परीक्षा की कापियाँ आदि की चर्चा उन्हें मंच पर दिखाने से एक मध्यवर्गीय ड्राइंग रुम या बाहरी बैठक का चित्र सामने खड़ा रहता है। प्रस्तुत नाटक का आधेसे अधिक 'कार्य' (Action) इसी बैठक में घटित होता है। अतः इसे अरस्तू के विवेचन के ही आधार पर देश या स्थान की एकता (Unity of Place) कहा जा सकता है।

२) कार्य की एकता :

नाटक की समस्त घटनाएँ कारण-कार्य शृंखला के 'पूर्वापर क्रम' में बंधी हुई है। अतः कार्य की एकता (Unity of Action) का भी इस नाटक का दूसरा बड़ा गुण माना जाना चाहिए।

३. काल की एकता :

नाटक में घटनाओं के निरन्तर 'काल की एकता' (Unity of Time) की शर्त भी यहाँ पूरी हो जाती है।

एक और प्रायव्हेट संस्थान के कॉलेज का आधुनिक वातावरण, दूसरी ओर महाभारतकालीन वातावरण ऐसा द्विस्तरीय वातावरण निर्माण किया गया है।य अरविंद की कथा में लगभग तीन-चार साल का समय बीतता है, तो द्रोण कथा मे द्रोण की युवावस्था से लेकर अंत तक का जीवन गुजर जाता है परन्तु इससे कथा की दृष्टि से

अधिक फर्क नही पडता। अतः देश - काल - वातावरण निर्माण की दृष्टि से लेखक को सफल माना जा सकती है। विमलेन्दु की निर्मिति के समय उसका अंधेरे कोने से उभरना और वार्ता करना भी रहस्यमय तथा कुतुहलोत्पादक वातावरण निर्मिति में सहायक है। इसलिए नाटक में देश - काल - वातावरण तत्व को भी यहाँ सफलतासे निभाया गया है।

निष्कर्ष :

प्राचीन काल का वातावरण आधुनिक काल से वातावरण जोड़ने का नाटककार ने बजोड प्रयत्न किया है। द्रोणाचार्य और अरविंद की प्रवृत्ति में समानान्तरता दिखाई है। अरविंद अपनी आचार संहिता को भुलाने के लिए विवश हो जाता है क्योंकि पत्नी, विधवा बहन और बिमार माता, पुत्र का जीवन उसपर आश्रित है। तो सुविधा और सुरक्षा के प्रति आकर्षण कृपी द्वारा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करता है। इस नाटक में दो युग और उनसे जुडे परिवेश और समाज विचारणीय बात है। नाटक मे देश - काल और वातावरण इस तत्व को निभाने की कोशिश भी नाटककार ने पूरी तरह से की है।

६) भाषाशैली :

भारतीय आचार्यो ने वृत्ति रुप में नाटक की शैलियों का ही विवेचन किया है। वृत्तियों को भारतीय आचार्य नाटक की माताएं मानते है। लेकिन अधुनिक भाषा में जिसे शैली कहते है उसमे और वृत्ति में कुछ भेद है। वृत्ति में भारती, सात्वीकी, कौशकी, आरभटी वृत्तियोंका अंतर्भाव होता है, तो शैली में वैदर्भी गौडीय और पांचाली शैलीयों का अंतर्भाव होता है। शैली का संबंध नाटक के बाह्यरंग याने उसकी अभिव्यक्ति से अर्थात भाषा से संबंधित है। नाटक की सफलता में शैलीतत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

लेखक की विशिष्ट दृष्टि ही शैली को जन्म देती है। अर्थात समर्थ शैलीकार ही भाषा का सफल प्रयोग कर सकता है। लेखक की विशिष्ट शैली उसके विचारों को अभिव्यक्ति देती है। लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशोंका प्रयोग, वाक्यो की बनावट और उसकी ध्वनि ये सब शैली के अंतर्गत आते है।

नाटक की भाषा देश, काल आदि के अनुरुप हो। वह पात्रानुकूल होना भी आवश्यक है। सहज और सुबोध भाषा नाटक को सजीव बना देती है। भाषा के बोझील होने से कथा विकास क्रम में बाधा उत्पन्न होती है। साथ - ही - साथ वह नाटक को नीरस भी बना देता है। भाषा में अनावश्यक सौंदर्य तत्वों के प्रयोग से नाटक मे कृत्रिमता निर्माण होती है। ऐसी कृत्रिमता रस की हानी करती है। नाटककार की लेखन शैला प्रभावकारी हो तो नाटक भी प्रभावकारी सिध्द होता है।

'एक और द्रोणाचार्य' भाषा की दृष्टि से पूर्णतः सफल मानना कठिन है। द्रोण कथा में भाषा की दृष्टि से औचित्य निर्वाह नहीं हुआ है। विमलेन्दु की भाषा प्रेत की होने पर भी, एक प्राध्यापक के प्रेत की नहीं लगती। यदु की भाषा भी ऐसी ही है लीला, कृपी की भाषा में औदात्य अधिक है, नारीत्व बहुत कम है। यह नाटक प्राचीण तथा आधुनिक कथाबीजों पर आधारित है।

प्रस्तुत नाटक मे व्यंग्यात्मक भाषा फारशी और उर्दू शब्दों की मात्रा में अंग्रेजी शब्दों का ज्यादा प्रयोग आया है। कुछ संस्कृत - निष्ठ शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। फिर भी कुल मिलाकर भाषा पर शेष जी का प्रभाव था ये माना जा सकता है।

१) व्यंग्यपूर्ण भाषा :

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में शिक्षा क्षेत्र में प्रचलित कृष्ण कृत्यों पर व्यंग्य करता है। इन कृत्यों का पर्दाफाश किया है। जैसे प्रिन्सिपल कहते हैं -

"प्रेसिडेण्ट साहब आखिर मालिक है। अन्नदाता है। उनका कॉलेज उनकी मर्जी। इसलिए तो कहता हूँ, नौकरी करनी है, तो कान बंद कर लो। आँखे मूँद लो। मुँह खुला रखो बोलने के लिए नहीं, रोटी खाने के लिए। " ९५

"उस कमीने आदमी ने दुकानों की तरह बीस शिक्षण संस्थाएं खोल रखी है। साथ ही लेन-देन का व्यापार करता है। शिक्षण संस्थाओं की लाखो रुपयों की ग्रँट का उपयोग यह शिक्षाशास्त्री अपने लेन-देन के व्यवस्था में करता है। ....." ९६

"हाँ , ग्रँट के रुपयों का गबन। कल तक सब कुछ एडजस्टमेंट था, अंडरस्टैंडींग था। पर विरोध करते ही गबन हो गया। "९७

इसी प्रकार का विमलेन्दु का एक वक्तव्य देखें -

"याद है, जब तुमने विरोध की भाषा अपनायी, सत्ता ने तुम्हारे अस्तित्व पर सीधे हमला किया। कभी प्रलोभन देकर, कभी अतंक जमा कर। इसलिए विरोध मत करो। सब विरोध बकवास है। यदि व्यवस्था तुम्हें अपने इशारे पर भौंकने वाला कुत्ता बनाना चहती है, तो भौंको, कुत्ते के पिल्लों को जन्म दो। चन्दु और युधिष्ठिर मत पैदा करो। राजकुमार और दुर्योधन पैदा करो ..... । " ९८

भाषागत व्यंग्यात्मकता के साथ सांकेतिकता भी नजर आती है। यहां अनुराधा के संकेत गर्भित कथन को देख लिया जाए, क्योंकि अरविंद के प्रति अपने इस अंतिम कथन में उसने शीघ्र ही आत्महत्या करने का पूर्व संकेत उसे किया है -

"आपने सचमुच मुझे कहीं का नहीं रखा। मेरे सब भ्रम टूट गये। अब आपके चिन्ता करने की जरुरत नहीं होंगी। कल शायद कोई सवाल ही न उठे। " ९९ अतः 'व्यंजना' शब्दशक्ति और संकेतमयता से भी नाट्यभाषा को यहां विशेष शक्ति प्रदान की जा सकी है।

इस प्रकार कहीं-कहीं व्यंग्यात्मकता और व्यंजकता उभर आयी है, परन्तु भाषिक स्तर का यहां ज्यादा ध्यान नही लगता इसके बारे में जयदेव तनेजा भी लिखतें है - "पौराणिक और समकालिन दृश्यों मे यदि भाषा का अन्तर भी लिखा है - संभवतः रचना अधिक रोचक और कलात्मक ही हो सकती थी।" १००

२. मुहावरों का प्रयोग :

डॉ. शंकर शेष ने प्रस्तुत नाटक में भाषा की सौंदर्य वृध्दि के लिए जगह - जगह पर मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे -

..... जा कर बैठो हरिश्चंद्र के खाली आसन पर। १०१ .... पहले अपनी चमड़ी बचाओ और तब लगाओ हाथ दूसरों को। १०२ .... केस को रफा - दफा कराओ। १०३ ... पर बड़प्पन हांकने की आदत कहां जायेगी। १०४ .... दीवार से सिर मारते आधी उम्र कट गयी। १०५ .... लेकिन हमारे उस प्रिन्सिपल ने दो दांत निपोर दिये होंगे। १०६ .... तुम्हारी अकल पर पत्थार क्यो पड जाते है ? १०७ .... आराम से रहना किस्मत मे बदा हो, तब न ! १०८ .... देखकर तो मक्खी नहीं निगल सकता। १०९ ... तब अक्ल ठिकाने आयेगी। ११० .... कॉलेज की ईट-से-ईट बजाकर रख देंगे। १११ .... सारा दोष तुम पर मढ दिया जायेगा । ११२ .... हमेशा हें - हे करता रहता है। ११३ .... मेरा रोम - रोम जला रहा है। ११४ .... अपमान का घूँट पिओ । ११५ .... तुम द्रुपद को तबस - नहस कर सकते हो। ११६ ... बात का बतंगड़ बनाने मे कोई फायदा नहीं। ११७ .... वह डोरे डाल रहा है मारी पत्नी पर। ११८ ... जब देखो चेहरा लटकाए रहते हो। ११९ .... तो क्या मामला तुल पकडेगा । १२० .... पाडवों की सेनापर कहर ढा रहा था। १२१ .... दो नम्बर बढ़ा ही देतो तो कौन-सा आसमान फट जाता। १२२ सारी आफत मेरे सिर ! १२३ .... कान पक गये तुम्हारी बाते सुनते - सुनते। १२४ .... झक मारने ! १२५ .... सैंकडो विद्यार्थी मेरे खून के प्यासे हो जायेंगे। १२६ ..... जरुर सिंचाई करेंगे मिसेज दरबार की। १२७ .... व्यवस्था उसकी पीठ थपथपाती भी। १२८

३) कहांवते :

'जान है, तो जहान है। ' १२९ जैसी लोकोक्तियाँ नगन्य ही है।

४) सूक्तियों का प्रयोग :

नाटककारने सूक्तियों का भी प्रयोग किया है। जैसे -

.... घर अंधेरा रखकर मंदिर में दिया जलाने से कोई फायदा होगा ? १३० .... आवेश में कोई तर्क नहीं होता। १३१ .... नौकरी करनी है तो लाथ भी खाने पड़ेगी । १३२ .... भूख मेरे सिध्दान्तो से बड़ी हो गयी है। प्रतिशोध ने मेरे विवेक जीता। १३३ .... जो मनुष्य को मनुष्य बनाता है। १३४ .... इतिहास तो कलभी हंसेगा आप पर। १३५ .... जब भी प्रतिभा को जाति और व्यवस्था के नाम पर कुचला जाएगा तो लोग आपको ही याद करेंगे । १३६ आदि।

इस तरब चिन्तशीलता की दृष्टि से कुछ सूक्तियों का रुप भी देखा जा सकता है।

५) नयी भाषा का प्रयोग :

आजकल गद्य और पद्य मे तीखी जनभाषा का प्रचलन है। इसका प्रभाव भी प्रस्तुत नाटक की भाषा पर पड़ा है। उसके रंग में रंग कर प्राचीन और वर्तमान काल दोनों मिल-जुल कर एकरुप हुए दिखाई देते है। जैसे - कृपी और द्रोणाचार्य के कुछ कथन देखे -

१. "मैं अब ऐसी पीढ़ी तैयार करुंगा, जो केवल युध्द की भाषा बोलेगी। " १३७
२. "तुम से सत्ता से जुड़ने के लिए कह रही थी, सत्ता स्वंय चली आ रही है। " १३८
३. "आत्मबलिदान की भावा का व्याभिचार करता है। " १३९
४. "लेकिन मनुष्य का जन्म हमेशा एक अनचाही अवस्था मे होता है, तो मैं क्या करुँ ? " १४०
५. "जो व्यवस्था तोड़ी जा सकती उसमे विश्वास करके ही जिया जा सकता है। "१४१
६. "अपने दारिद्रय से बदला लेने की हिंसक भावना मुझे ग्रस रही है। "१४२
७. "मेरे शब्द फुंकार कर खड़े नहीं हुए। " १४३
८. "सुविधाने मेरी धार भोथरी कर दी। मैंने भीतर के उस आदमी को जगाया, जो बदला लेता है, जो अपने अहंकार को संसार से बड़ा मानता है। द्रुपद से बदला लेने के लिए मैंने अपने विद्यार्थीयों को युध्द का उन्माद दिया। उनका उपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया, कृपी ! मैं हर दिन छोटा आदमी होता गया। " १४४

६) उर्दू, अरबी, फारसी शब्द :

दम, मतलब, आफ़त, एसहान, सिफ़ारिश, लायक, नालायक, जवाब, फ़रामोश, अलावा, खबरे, बदकिस्मती, नकल, अक्ल, ईमानदारी, सच्चाई, तहखाना, हजार, औलाद, आराम, किस्मत, गरज, जिम्मेदारी, बहादुरी, जिंदगी, बेवकूफयों, हंगामा, जगह, फायदा, इतमिनान, सवाल, दिमाग, रफा - दफ़ा, जोश इंतज़ार, शक, तरफ, दुश्मनी, समझदारी, इराद़ा, जानकारी, नफ़रत, आखिर, वक़, मुसीबत, खाक़, दावा, दुनिया, उम्र, शाद़ी, बेहूद़ा, दुकान, ठिकाणा, शायद़, खुश, साहब, नाहक, खैर, फ़साद, हद, जरुर, जल्लाद, हमेशा, सुबह, शाम,हिम्मत, तैय्यार, परेशान, जान, जहान, बदतमीजी, सही, शर्म, इस्तेमाल, तेजी, शिकार, खिलाफ़ख़ारा, बाप, जायद़ाद़ गुण्ड़ागरी, दफ़नाना, सामने, तरह, अक्सर, लोग, माफ़ी (मुआफ़ी),साफ़, गुनहगार,सरासर, शाब्बास, सजा,

BARR. [illegible] LIBRA
IVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

किस्म, आदमी, मालिक, मालूम, मौके, खराब, गलत, कोशिश, नजरिया आदि।

७) तद्भव शब्द :

अस्पताल, हाथ, काम, अपसर, भाभी, पत्थर, नक्खी, कान, पाँव, साला, दूध, माथा, बूंद, घर, बहन, दांत, तनखा, बूढा, आँख, मुंह, चालीस, गधा, उल्लू, बात आदि।

८) संस्कृत तत्सम शब्द :

आचार्य, आचार्यत्व, आपमान, कल्पना, विधवत्ता, समर्पित, शक्ति, योजना, जाति, सुविधा, हरिश्चंद्र, आदर्श, नाटक नपुंसक, विधवा, सिध्दांत, स्त्री, चमत्कार, पांडु, प्रभावित, साधारण, अभिभूत, यदु, ग्रहण, राजपुत्र, निश्चित, शोभा, पाप, अन्नदाता, विश्वास, न्याय, महान, भगवान, विरोध, नरक, पराक्रम, भयानक, बलि, परीक्षा अंदोलन, बहिष्कार, भूमिका, अपराधी, नियम, आरोप, विरोधी, परिणाम, योग्यता, निर्यात, सत्ता, हत्या, स्वार्थी, केवल, मृत्यु, प्रेत, मन, समय, आत्मत्याग, बलिदान, शब्द, चिता, मुद्रा, तपस्वी, त्यागी, क्रांतिकारी, गोरस, .प्राणहंता, पात्र, स्वागत, राष्ट्रभाषा, सम्मान, कपट, स्वाद, स्वीकार, गुरुपौर्णिमा, रथ, समस्या, शिष्य, बाण, धनुर्विद्या, ब्राम्हण, क्षत्रिय, अधिकार, प्रकृती, आशीर्वाद, रजस्वला, गुरुदक्षिणा दीक्षा, स्वयंभू, शास्त्र, प्रतिभा आदि।

९) देशज शब्द :

चमड़ी, कलौंजी, चूतियापा, लिजलिजे, पचडे पट्ठा, लौंडो, कचरा, गंजेड़ी, सट्टा, वारिदी, मुश्कील, रास्ता, जून आदी।

१0) अंग्रेजी शब्द :

ऐक्शन, बिल्डिंग, क्लर्क, वाईस प्रिन्सिपल, ग्लोरिफाई, मिडलक्लास, प्रोफेशनल, एथिक्स, एक्सिडेण्ट, प्रेसिडेण्ट, मनी-ऑर्डर, इन्फॉर्म, रिपोर्ट, प्रोफेसर, कमेटी, मेंबर, ज्युनिअर, लेक्चरर, कॉलेज युनिर्सिटी, पर्सनैलिटी, म्युनिसिपैलिटी, पब्लिक, इमेज, फर्स्ट ईयर, योर ऑनर, चेअरमैन, शॉपिंग, ऑफकोर्स, रेस्टीकेट, अंडर स्टैंडिंग, कॉलेज एडजस्टमेंट, अथॉरिटीज, ब्लड - प्रेशर, मेडिकल, ऑपरेशन, ऐश-ट्रे, सर, स्टाफ, मिस्टर, राशन-कार्ड, फेल, केस, कैंसर, सरकमस्टांशियल, एविडेंसस, क्लिफ, सिगरेट, सीनीअर आदि।

११) अंग्रेजी वाक्य :

कहीं-कहीं पूरे के पूरे अंग्रेजी वाक्य भी प्रयुक्त हुए है। यथा -

यू आर ए लायर ! १४५ आवर ऑफ कनेक्शन इज अप्रोचिंग। १४६ दिस इज नो आरग्युमेंट। १४७ यू गेट आउट फ्रॉम हिअर। १४८ माय कार्डस आर ओपन .... टेक योर योन टाईम। ... १४९ यु आर द ओनली प्रोफेसर, हूम आय रिस्पेक्ट सो मच। १५0... नाऊ द डिफेंस कांऊसिल में क्रॉस एक्जामिन द विटनेस। १५१ .... गो अहैड विद योर क्वेशचन्स ? १५२ .... नो सर, माई डिसिजन इज फायनल, कांट बीचेज्ड। १५३ इमेजिंन माय स्टेट ऑफ माईण्ड .... । १५४ यू डोंट अंडरस्टैंड द ट्रैजेडी। १५५ आय डिस लाइक, यू गेट आउट। १५६

उर्दू और फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, परन्तु तुलना में अंग्रेजी शब्द और वाक्यांशो का प्रयोग 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक मे अधिक पात्रों मे हुआ है। जो कथानानुकूल एवं पात्रानुकूल भी है।

१२) ग्राम्यता या मराठीपन :

१. तुम्हारा नाम लेकर लौंडों को भड़का रहा है। १५७
२. फर्स्ट ईअर का लौंडा नहीं हूं ... । १५८
३. अपने बाप का क्या जाता है। १५९
४. मैंनें नहीं बुलाया तुम्हें मेरी गरज ? १६०

१३) अश्लीलता :

छोडो ये सिध्दान्त - उध्दान्त का झमेला। १६१ आ गया जोश में। हो गया झमेला। १६२ होड लगी हुई थी, हरामी लोगों में .... । १६३ किसी की जान जाय और ये साले अपनी पब्लिसीटी करें। १६४ इस साले ने मुसीबत खड़ी कर दी। १६५

१४) पुनरावृत्तिगत दोष :

ये भी इस नाटक के संवादो में खरते है। जैसे प्रिन्सिपल साहब लीला से वार्तालाप करते समय पूरे दिन आनें की बात कई बार दोहराता रहता है। यथा -

बुरे दिन जो आ गये। १६६ क्या दिन आ गये । १६७ इन्हें ही कहते है बुरे दिन। १६८ बुरे दिन किन्हे कहते है। १६९ बुरे दिन जो आ गये है। १७० क्या दिन आ गये है। १७१

एक छोटी सी भी भेट में दो - तीन शब्दों के हेर - फेर से एक ही वाक्य की ऐसी आवृत्ति बेहद खटकती है ।

इस प्रकार नाटक में दो स्थानो पर यदु और प्रेत - स्वरुप उपस्थित विमलेन्दु के कथनों में समानता से एक ही बात की आवृत्ति भी खटकती है। एक जीवित व्यक्ति और दूसरे का प्रेत एक - सी भाषा बोले, यह नितांत अस्वाभाविक है। दोनो कथन देखे -

१. नाटक के 'पूर्वार्ध्द' के सर्वप्रथम दृश्य मे यदु नायक प्रोफेसर अरविंद को इन शब्दों में फटकारता है - "लेकिन तुम हो न मिडल क्लास के आदमी। हर छोटे सवाल को ग्लोरिफ़ाई करोगे । हाहाकार मचाओगे। तुम्हें पूछता कौन है ? " १७२

२. नाटक के इसी पहले बाद के दूसरे दृश्य में विमलेन्दु भी अरविंद से लगभग यही शब्द दोहराते हुए कहता है - "साले मिडल क्लास के आदमी । आपनी हर समस्या के ग्लोरिफ़ाई करोंगे । " १७३

१५) भाषा की पात्रानुकूलता :

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक के संवादो की भाषा पूरी तरह से स्वाभाविक लगती है। भाषा की पात्रानुकूलता संवादोंमे दिखाई देती है। जैसे - प्रेत रुप में विमलेन्दु कहता है :

"(चीख कर) नहीं, यह सच है । आगे मत बोल जानता है, तू कौन है ? " १७४

— इसी प्रकार अरविंद के इस कथन में एक शिक्षक का शिष्य के प्रति निर्व्याज विश्वास प्रतिबिंबित हो रहा है। वह विमलेनदु के प्रेत से चन्दू के विषय में कहता है - "वह (चन्दू) मुझे बचाएगा, विमलेन्दु उससे मेरी विरोध हो सकता है। मैंने उसपर अन्याय किया है, यह भी सच है। परन्तु चंदू मेरा शिष्य है, आखिर वह कुछ तो सोचेगा। वह मुझे जरुर बचाएगा। " १७५

१६) अधूरे वाक्यों की योजना :

'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में अधूरे वाक्यों की सार्थक योजना में नाटककार को पूर्ण सफलता मिली है। कुछ उदाहरण देखें -

लीला : जाहिर है, तुमने फेल कर दिया उसे। मैंने जो सिफारिश की भी (विराम) और कोई करता तो १७६
अरविंद : मुझे बीच में क्यों ^ १७७
अनुराधा : मैं जानना चाहती थी कि १७८
प्रेसिडेण्ट : कॉलेज का नाश मार कर रख दिया। उसकी जगह आपको ... १७९
अरविंद : (फोन पर) पन्द्रह हजार का घपला ! लेकिन आप ही ने १८०
लीला : तो तुम भी १८१

उपरयुक्त संवादों मे अधूरे वाक्यो से भाषा स्वाभाविक हुयी है। यह भाषा बोलचाल की भाषा के समीप आने के कारण जीवन का यथार्थ आभास देने लगी है। इसलिए यहां नाट्य कला को भी जीवन की अनुकृति कहां जा सकता है।

१७) अलंकार योजना :

उचित अलंकारों के प्रयोग के कारण भाषा सौंदर्य में वृद्वि होती है। अलंकारों का यही धर्म है। प्रस्तुत नाटक मे भी उपमा रुपक जैसे अलंकारों का उपयोग किया है। कुछ उदाहरण देखेः

उपमा :

फुल - सी बच्ची । १८२ लोग कैसे चीटियों जैसे .... १८३, इतिहास की धार में लकडी के ठूंठ की तरह बहता हुआ। १८४, टूटे जहाज - सा द्रोणाचार्य। १८५ मेरी चमड़ी अब गैड़े की तरह मोटी .... । १८६

रुपक :

व्यवस्था के लाईट-हाऊस से अपनी दिशा मांगने वाले .... । १८७ समझौते के फंदे पर .... । १८८ सडे हुए आटे में बिलबिलाने वल कीड़ा। १८९

नाटककारने भावों की अभिव्यक्त के लिए व्यकरणिक चिन्हों का प्रयोग कर भाषा को अधिक संवेदनशील और प्रभावकारी बनाया है। प्रस्तुत नाटक में विमलेन्दु के कथन मे अन्तरिक क्रोध प्रकट हुआ है। जैसे - " तू द्रोणाचार्य है । कौरवों की भाषा बोलने वाला युध्द में भी उसका साथ देने वाला, तू किस बात का प्रोफेसर ? तू द्रोणाचार्य है। .... हां - हां तू ... द्रोणाचार्य है। एक और द्रोणाचार्य ! एक और द्रोणाचार्य ! एक और द्रोणाचार्य ! " १९०

इस प्रकार डॉ. शंकर शेष जी की भाषा की पात्रानुकुल और वैसी ही भावानुकुल रही है। भाषा की अर्थवत्ता की दृष्टि से वह सर्वत्र आक्रोश और आवेग से भरी है। मुहावरों, सूक्तियों की प्रयोग भी सार्थक हुआ है।

निष्कर्ष :

नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' के संवादों की भाषा कुछ के सार्थक अपवाद को छोडकर लघु चुस्त - दुरुस्त, वेगपूर्ण और सुगठित मानी जा सकती है। भाषा मे 'कथ्य' की गहरायी तथा चरित्रों का विकास करने की क्षमता देखी जा सकती है। भाषा में सांकेतिकता, काव्यात्मकता, व्यंग्यात्मकता, नाट्यानुरुपता, विषयानुकूलता, संवेदनशीलता, प्रौढता, सरस, मधुरता आदि सभी गुण विद्यमान है। 'लक्षणा' और 'व्यंजना' नामक शब्द शक्तियों ने नाट्यभाषा को अभुतपूर्व गहनता प्रदान की है। मंच के नये रुपबंध्द और नेपथ्यगत ध्वनि योजना के साथ प्रकाश क्रम के द्वारा दृश्य परिवर्तन की शैली समाविष्ट हुयी है। यह नाट्य - भाषा जैसे (आदालत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

दृश्यों और प्रेत विमलेन्दु के संग संवाद शैली वाले दृश्यों मे) अधिक व्यंजनापूर्ण होकर निखरी और संवरी है। वास्तव मे यह नाटक आदर्श संवाद-योजना का सुष्ट निर्देशन कहा जायेगा। कुल मिलाकर भाषा शैली कि दृष्टि से यह रचना समिश्र फलदायी है।

७. उद्देश्य :

नाटककार किसी ना किसी उद्देश्य से ही अपनी नाट्यकृति का निर्माण करता है। नाटक की घटना या कथा वस्तु किसी उद्देश को लेकर ही चलती है। कभी ये उद्देश्य सांकेतिक रुप में दिखाई देते है। प्राचीन काल में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के उद्देश्य सामने रखकर लिखा जाता था और अपना उद्देश्य स्पष्ट रुप से नाटक के प्रारंभ मे या अंत मे नाटककार पात्रों के मुंहसे स्पष्ट बताता था। अपने उद्देश्या या कथ्य को सामने रख कर ही घटना का विकास किया जाता है। उसी कथ्य के अनुरुप ही कथावस्तु का चयन नाटककार करता है। उद्देश्य को सामने रखकर नाटक के प्रसंग घटनाएं, संघर्ष परिचालित होते है। उद्देश्य प्राप्ति के साथ ही नाटक संघर्ष भी समाप्त हो जाता है।

डॉ. शेष जैसे आधुनिक नटककार अपना उद्देश्य स्पष्ट रुप से जाहीर करते नहीं दिखाई देते है। नाटक का अंतिम प्रभाव ही उद्देश्य को स्पष्ट करता है। नाटक के उद्देश्य के आधार पर ही नाटक का स्वरुप निश्चित होता है। किसी नाटक की यथार्थ या आदर्शवादी होना असल में उद्देश्य का यथार्थ या आदर्शवादी होना होता है। अव्यक्त उद्देश्य नाटक की कलात्मक स्वर को बढाता है।

'एक और द्रोणाचार्य' यह डॉ. शंकर शेष का एक बहुचर्चित नाटक है। अतः इसके बारे मे अनेक विद्वानों ने अपना मतव्य अभिव्यक्त किया है। जैसे -

डॉ. रीता कुमार ने इस नाटक को ऐसा सार्थक प्रयोग माना है। "जो एक प्रसिध्द पोराणिक कथा के माध्यम से वर्तमान शिक्षा सस्थान में व्याप्त असंगतियों और शिक्षक के पंगू आचरण पर प्रहार करता हैं। " १११

डॉ. दशरथ ओझा जी लिखते हैं, - "नाटककार का मुख्य उद्देश्य कॉलेज शिक्षा की दुर्व्यवस्था का उद्घाटन करता है। " ११२

डॉ. गिरीश रस्तोगी लिखते हैं, - "शंकर शेष का यह नाटक हमारी सामाजिक स्थिति को, व्यवस्था और आदमी के संघर्ष को, मनुष्य की विडम्बना को ही प्रस्तुत करता हैं। " ११३

डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल "चन्द्र" लिखते हैं कि , - "एक और द्रोणाचार्य नाटक लिखने में डॉ. शेष का लक्ष वर्तमान अध्यापक को द्रोणाचार्य के रुप में प्रस्थापित करना है। " ११४

नर नारायण राय लिखते हैं, - "एक और द्रोणाचार्य महाभारत के एक पूरे संदर्भ को अधुनिक जीवन से जोडने की कोशिश है। " ११५

डॉ. संपतराव जाधव जी के अनुसार, - "वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त अनाचार की विडम्बना को उजागर करना तथा इसकी गहरी जडों की सूचना देकर इस समस्या की गंभीरता की ओर दर्शको का ध्यान आकृष्ट करना इसका उद्देश्य है। " ११६

डॉ. सुनिल कुमार लवटे जी के अनुसार, - "द्रोणाचार्य की परंपरा को खत्म कर पुनः स्वप्रज्ञ गुरुओं की परंपरा का निर्माण करना आधुनिक समाज की भलाई के लिए आवश्यक है। इस चुनौती के प्रति आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग को जागृत करना नाटक का लक्ष है। " ११७

डॉ. प्रकाश जाधव लिखते हैं, - "एक ओर द्रोणाचार्य के माध्यम से शिक्षा संबंधी लोगों को जागृत करना डॉ. शेष का उद्देश्य है। " ११८

डॉ. मधुकर हसमनीस इनके अनुसार, - "द्रोणाचार्य की पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार, गुलामी, असंगतियों, शिक्षकों के दब्बूपन पर प्रकाश डालना इस नाटक का उद्देश्य रहा है। " ११९

उपर्युक्त सभी आलोचकों की आलोचना देखने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रायः सबने शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त वर्तमान युगीन भ्रष्टाचार को ही इसका प्रमुख विषय माना है। और इसके बाद अन्य विषयों की और अपनी-अपनी दृष्टि से अलग-अलग संकेत दिये हैं। ऐसे अलग-अलग दृष्टिकोणों से इस नाटक की प्रभावोत्पादकता ही सामने आती है। तथा विषय का गांभीर्य स्पष्ट होता है।

निष्कर्ष :

डॉ. शंकर शे। स्वयं एक विद्यार्थी प्रिय और आदर्श प्राध्यापक रह चुके हैं, अतः इस नाटक क्षेत्र का उनका अपना अनुभव है। आप स्वंय शासकीय कॉलेज के प्राध्यापक होने से असुरक्षा जैसी समस्याएं उनके सामने नहीं थी, परन्तु अन्यत्र जो भ्रष्टता, फैलती जा रही थी उसने उन्हे बेचैन कर दिया था, और इसकी प्रस्तुति एक कृति में हुई है। एहसान मंदी दिखाने के लिए गुण बढ़ाना या पैसों की प्राप्ति के लिए गुण बढाना विद्यार्थीयों को नकल करने में सहायता करना, अपने लाभ के लिए अपने ही साथियों की चुंगलीयाँ खाना, व्यवस्था या सत्ताधारियों की कृपा पाने के लिए उनकी चापलूसी करना, उनके विरोधकों के बेटों पर झूठे इल्जाम लगाना, चालकों द्वारा शिक्षा केंद्रों को व्यापार या दुकान मानना, शिक्षा क्षेत्र में आर्थिक व्यवहारो की भ्रष्टता, नामधारी कमेटी मेंबरों का अंगूठे छाप होना, विद्यार्थीयों की गुण्डागर्दी तथा मनमानापन, आध्यपकों की आदर्शहीनता, प्राचार्य जैसे पदाधिकारियों के लिजलिजापन तथा नौकरी के सुरक्षा के लिए तुलवे चाटना आदि के अनेक भ्रष्टाचारी रुप यहां व्यक्त हुए है। और वर्तमान शिक्षा क्षेत्र मे फैली गंधगी का पर्दाफाश करते है। तथा यथार्थ को नंगा कर देते है। यह इन कृति की सफलता है।

समाज में व्याप्त अर्थप्रधानता और भ्रष्टाचार की भर्त्सना करना, मानव की अवसरवादिता और स्वार्थपूर्ण मानसिकता को उजागर करना, व्यवस्था के दमन चक्र और शोषण तंत्र का पर्दाफाश करना, युवावर्ग और नारी जाति को स्वातंत्र्य की चेतना देना, मध्यम वर्ग की निर्विकल्पता, और विवशता की त्रिशंकु स्थिति पर प्रकाश डालना शिक्षा का महान लक्ष को भूल कर उसका जो विडम्बन हो रहा है, उसका भयावह चित्र प्रस्तुत करना, यह 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक का उद्देश्य है। ९

८) शीर्षक की सार्थकता :

कथ्य की अभिव्यक्ति शीर्षक से ही होती है। कुशल नाटककार का कौशल उसके दिये नाटक के शीर्षक से ही मालुम हो जाता है। पात्र, घटना, उद्देश्य आदि उनके दृष्टिओं से शीर्षक दिया जाते हा। डॉ. शेष के नाटक का शीर्षक उनकी दृष्टि को कलात्मकता के परिचायक है।

'एक और द्रोणाचार्य' " यह शीर्षक अपने मे अनेक विशेषताएं लिये हुए है। पंडित सत्यदेव दुबे ने इसे "और एक द्रोणाचार्य" १०० बनाकर अपनी मंचीय प्रस्तुति की विशेषता का निर्वाह किया था। इस नाटक का मूल नाम है "एक और द्रोणाचार्य" किन्तु प्रयोग समय नाम बदल दिया गया है। जो अर्थ व्यंजकता में बदलाव लाता है, जिसका उल्लेख सर्वेक्षण के अध्याय में आ गया है। द्रोणाचार्य जैसे - महाभारत के पात्र के नाम का प्रयोग कुतूहलवर्धक है। यह वर्तमान शिक्षा का प्रतीक बन अर्थ - सघन बन जाता है। अतः यहा शीर्षक चुनाव से डॉ. शंकर शेष की कल्पनाशीलता का ही परिचय मिल जाता है। अतः 'एक और द्रोणाचार्य' यह शीर्षक सार्थक सिध्द हुआ है।

निष्कर्ष :

'एक और द्रोणाचार्य' यह नाटक सभी तत्वों की दृष्टि से खरा उतरता है। इतना

सब होने के बावजूद अरविंद जैसे भ्रष्ट व्यक्तित्व के लिए द्रोणाचार्य का जो आधार चुना गया है, वह महाभारतीय द्रोणाचार्य जी के साथ अन्याय करनेवाला लगता है। द्रोणाचार्य और एकलव्य को जिस रुप में अनेक साहित्यकों के द्वारा चित्रित किया गया है। वह रुप एकांगी है। कम-से-कम एकलव्य के दुत्कारे जाने और अंगूठा कटवाने के कार्य को द्रोणाचार्य जी के द्वारा किया गया है - अन्याय अथवा शैक्षणिक भ्रष्टाचार माना गया है, लेकिन किसी ने भी द्रोणाचार्य ने ऐसा क्यों किया था ? इस प्रश्न के उत्तर की खोज नहीं की है।

-।-।-

संदर्भ-सूची

				पृष्ठ
१.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त		- डॉ. गोविंद त्रिगुणायत	१८८
२.	'अभिनव नाट्य शास्त्र'		- आचार्य भरतमुनि	अ.नं. ११६
३.	रंगमंच और नाटक		- डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल	७०
४.	हिन्दी नाटकों की शिल्पविधी का विकास		- डॉ. शांति मलिक	७५
५.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त		- डॉ. गोविंद त्रिगुणायत	११४
६.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त		- डॉ. गोविंद त्रिगुणायत	११५
७.	शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त		- डॉ. गोविंद त्रिगुणायत	१८८
८.	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	३१
९.	"	वही	"	८१
१०.	"	वही	"	८६
११.	"	वही	"	११०
१२.	"	वही	"	१०४
१३.	"	वही	"	१०४
१४.	"	वही	"	१०८
१५.	"	वही	"	
१६.	समकालीन हिन्दी नाटककार		- डॉ. गिरीश रस्तोगी	११३
१७.	रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष		- डॉ. प्रकाश जाधव	५५
१८.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच		- श्री. जयदेव तनेजा	४१
१९.	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	१३
२०.	"	वही	"	११
२१.	"	वही	"	१५
२२.	"	वही	"	१०
२३.	"	वही	"	१६
२४.	"	वही	"	९९
२५.	"	वही	"	१००
२६.	"	वही	"	१०८
२७.	डॉ. शंकर शेष के साहित्यिक विषयों और शिल्पविधियों का अनुशीलन		- डॉ. संपतराव जाधव	३००
२८.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच		- श्री. जयदेव तनेजा	१०९
२९.	नाटककार शंकर शेष		- डॉ. सुनील कुमार लवटे	४८
३०.	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	२२
३१.	"	वही	"	१२
३२.	"	वही	"	१०
३३.	"	वही	"	१५
३४.	"	वही	"	६२
३५.	"	वही	"	७६
३६.	"	वही	"	२८
३७.	"	वही	"	५७
३८.	"	वही	"	७१
३९.	"	वही	"	३९
४०.	"	वही	"	७८
४१.	"	वही	"	३७
४२.	"	वही	"	४०
४३.	"	वही	"	८०
४४.	"	वही	"	१०६
४५.	"	वही	"	१०७

४६.	"	वही	"	३०
४७.	"	वही	"	१८
४८.	"	वही	"	१९
४९.	"	वही	"	२०
५०.	"	वही	"	२४
५१.	"	वही	"	२७
५२.	"	वही	"	८२
५३.	"	वही	"	९९
५४.	"	वही	"	१००
५५.	"	वही	"	१२
५६.	"	वही	"	१३
५७.	"	वही	"	६१
५८.	"	वही	"	४४
५९.	"	वही	"	४४
६०.	"	वही	"	४४
६१.	"	वही	"	४६
६२.	"	वही	"	५१
६३.	"	वही	"	५२
६४.	"	वही	"	५४
६५.	"	वही	"	५५
६६.	"	वही	"	८३
६७.	"	वही	"	८४
६८.	"	वही	"	८५
६९.	"	वही	"	८६
७०.	महाभारत		- श्री शास्त्री रामनारायण दत्त अध्याय १३०	श्लोक नं. ५१९
७१.	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	४८
७२.	"	वही	"	८१
७३.	"	वही	"	८४
७४.	"	वही	"	८४
७५.	"	वही	"	८४
७६.	"	वही	"	८५
७७.	"	वही	"	४२
७८.	"	वही	"	८६
७९.	"	वही	"	८९
८०.	"	वही	"	८३
८१.	"	वही	"	५०
८२.	"	वही	"	५१
८३.	"	वही	"	५२
८४.	"	वही	"	५३
८५.	"	वही	"	५४
८६.	"	वही	"	५४
८७.	"	वही	"	५४
८८.	"	वही	"	५५
८९.	"	वही	"	५५
९०.	नाटककार शंकर शेष		- डॉ. सुनील कुमार लवटे	४९
९१.	राजपथ से जनपथ - नट शिल्पी - शंकर शेष		- डॉ. सुरेश गौतम तथा डॉ. वीणा गौतम	
९२.	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	१०८

९३.	"	वही	"	९९
९४.	"	वही	"	८६
९५.	"	वही	"	९९
९६.	"	वही	"	७५
९७.	"	वही	"	७६
९८.	"	वही	"	१०७
९९.	"	वही	"	७५
१००.	समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच		- श्री. जयदेव तनेजा	२०६
१०१	एक और द्रोणाचार्य		- शंकर शेष	१०
१०२	"	वही	"	१२
१०३	"	वही	"	१३
१०४	"	वही	"	१२
१०५	"	वही	"	१४
१०६	"	वही	"	१४
१०७	"	वही	"	११
१०८	"	वही	"	११
१०९	"	वही	"	१२
११०	"	वही	"	१४
१११	"	वही	"	१६
११२	"	वही	"	२१
११३	"	वही	"	२९
११४	"	वही	"	४६
११५	"	वही	"	४६
११६	"	वही	"	४६
११७	"	वही	"	७३
११८	"	वही	"	७९
११९	"	वही	"	५९
१२०	"	वही	"	६१
१२१	"	वही	"	१०२
१२२	"	वही	"	१०
१२३	"	वही	"	१०
१२४	"	वही	"	१२
१२५	"	वही	"	२१
१२६	"	वही	"	३४
१२७	"	वही	"	५७
१२८	"	वही	"	१०७
१२९	"	वही	"	२०
१३०	"	वही	"	२०
१३१	"	वही	"	८४
१३२	"	वही	"	१८
१३३	"	वही	"	८६
१३४	"	वही	"	८८
१३५	"	वही	"	५४
१३६	"	वही	"	५४
१३७	"	वही	"	४६
१३८	"	वही	"	४६
१३९	"	वही	"	१०७
१४०	"	वही	"	५०
१४१	"	वही	"	५१

१४२	"	वही	"	८८
१४३	"	वही	"	८९
१४४	"	वही	"	८७
१४५	"	वही	"	२३
१४६	"	वही	"	१०५
१४७	"	वही	"	२३
१४८	"	वही	"	३६
१४९	"	वही	"	३३
१५०	"	वही	"	३३
१५१	"	वही	"	१०१
१५२	"	वही	"	९५
१५३	"	वही	"	७२
१५४	"	वही	"	६०
१५५	"	वही	"	३१
१५६	"	वही	"	२३
१५७	"	वही	"	३४
१५८	"	वही	"	३८
१५९	"	वही	"	१३
१६०	"	वही	"	३८
१६१	"	वही	"	१३
१६२	"	वही	"	३१
१६३	"	वही	"	३१
१६४	"	वही	"	३१
१६५	"	वही	"	११
१६६	"	वही	"	१७
१६७	"	वही	"	१७
१६८	"	वही	"	१७
१६९	"	वही	"	१८
१७०	"	वही	"	११
१७१	"	वही	"	२०
१७२	"	वही	"	१३
१७३	"	वही	"	४०
१७४	"	वही	"	१०८
१७५	"	वही	"	१२
१७६	"	वही	"	१०
१७७	"	वही	"	२६
१७८	"	वही	"	६७
१७९	"	वही	"	३३
१८०	"	वही	"	७२
१८१	"	वही	"	७५
१८२	"	वही	"	३१
१८३	"	वही	"	९०
१८४	"	वही	"	१०८
१८५	"	वही	"	१०८
१८६	"	वही	"	७५
१८७	"	वही	"	१०८
१८८	"	वही	"	७४
१८९	"	वही	"	७४
१९०	"	वही	"	१०८

१९१ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में - डॉ. रीता कुमार ११२

१९२ आज का हिन्दी नाटक - प्रगति और प्रभाव - डॉ. दशरथ ओझा २२८

१९३ समकालीन हिन्दी नाटककार - डॉ. गिरीश रस्तोगी २२७

१९४ हिन्दी नाटक और नाट्य समीक्षा - डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल ७५

१९५ आधुनिक नाटक एक यात्रा दशक - श्री नरनारायण राय ३१३

१९६ डॉ. शंकर शेष के साहित्यिक विषयों और शिल्पविधियों का अनुशीलन - डॉ. संपतराव जाधव ५०१

१९७ नाटककार शंकर शेष - डॉ. सुनील कुमार लवटे ५०

१९८ रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष - डॉ. प्रकाश जाधव ६८

१९९ साक्षात्कार से - डॉ. मधुकर हुसमनीस

२०० टिप्पणी टाईप्ड प्रति - पंडित सत्यदेव दुबे

-।-।-